राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

समय दर्शन

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

ESTD : Since 2011

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक खबरों के साथ

वर्ष 06, अंक 207 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये रायपुर, गुरूवार 05 सितंबर 2024 www.samaydarshan.in

सार समाचार

सैम पित्रोदा ने राहुल को बताया राजीव गांधी से अच्छा विचारक, कहा- उनमें प्रधानमंत्री बनने के गुण

नई दिल्ली. भारतीय ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने राहुल गांधी को अपने पिता राजीव गांधी से अच्छा रणनीतिकार और विचारक बताया। उन्होंने कहा कि दोनों नेता भारत के विचार के संरक्षक हैं। राहुल गांधी में भविष्य के प्रधानमंत्री के सभी गुण हैं। पित्रोदा ने राहुल गांधी की विदेश यात्रा को लेकर भाजपा की ओर से किए गए हमले को फर्जी करार दिया। पित्रोदा ने राहुल गांधी की अमेरिका यात्रा को लेकर कहा कि वह आधिकारिक क्षमता के तहत अमेरिका नहीं आ रहे हैं। बल्कि उनको व्यक्तिगत स्तर पर कैपिटल हिल में कुछ लोगों से बातचीत करनी है। वह थिंक टैंक के लोगों से मिलेंगे और जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय में भी बातचीत करेंगे। पित्रोदा ने कहा कि उन्होंने राजीव गांधी, पीवी नरसिम्हा राव, मनमोहन सिंह, वीपी सिंह, चंद्रशेखर और एचडी देवेगौड़ा जैसे कई प्रधानमंत्रियों के साथ काम किया है। उन्होंने कहा कि राहुल और राजीव के बीच अंतर यह है कि राहुल कहीं अधिक बौद्धिक, विचारक हैं और राजीव थोड़ा अधिक काम करने वाले थे। उनका डीएनए एक जैसा है, उनकी चिंताएं एक जैसी हैं। वह वास्तव में बेहतर भारत बनाने में विश्वास रखते हैं। उनकी कोई बड़ी व्यक्तिगत ज़रूरतें भी नहीं हैं।

उन्होंने कहा कि राहुल राजीव गांधी से कहीं अधिक रणनीतिकार हैं। वे अलग-अलग समय, अलग-अलग उपकरण, अलग-अलग अनुभव रखते हैं। उनको अपने जीवन में दो बड़े दर्द झेलने पड़े थे। पहला अपनी दादी की मौत का और दूसरा पिता की मौत का। पित्रोदा ने कहा कि सामूहिक रूप से उस भारत का निर्माण करना हमारा काम है जिसकी हमारे संस्थापकों ने कल्पना की थी। राहुल गांधी की छवि आखिरकार वैसी ही बन रही है जैसे वह हैं।

राहत-बचाव एजेंसियों ने 37 हजार लोगों को बचाया

भारी बारिश से गुजरात में एक हफ्ते में 49 लोगों की मौत

सूरत (एजेंसी)। गुजरात इस समय बाढ़ का दंश झेल रहा है, राज्य के कई जिलों में बाढ़ के पानी के आम जनजीवन बहुत प्रभावित हुआ है। वहीं सरकारी आंकड़े के मुताबिक राज्य में अगस्त महीने में हुई भारी बारिश से 49 लोगों की मौत हो चुकी है। 25 से 30 अगस्त के बीच गुजरात के कई इलाकों में गहरे दबाव के कारण भारी से बहुत भारी बारिश हुई। राज्य राहत आयुक्त आलोक कुमार पांडे ने बताया कि गुजरात-राजस्थान सीमा पर बना दबाव धीरे-धीरे अरब सागर में चला गया (जो बाद में चक्रवाती तूफान असना में बदल गया)।

22 लोगों के परिजनों को दी गई सहायता राशि

गांधीनगर स्थित राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र (एसईओसी) में राज्य राहत आयुक्त आलोक कुमार पांडे ने बताया कि इस अवधि के दौरान, बिजली गिरने, दीवार गिरने और बाढ़ के पानी में डूबने जैसी बारिश से संबंधित घटनाओं में 49 लोगों की मौत हो गई। राज्य राहत आयुक्त ने कहा, 49 मौतों में से 22 के परिजनों को पहले ही नियमों के अनुसार मुआवजे के तौर पर 4-4 लाख रुपये दिए जा चुके हैं। मारे गए 2,618 पशुओं के मालिकों को 1.78 करोड़ रुपये की राशि वितरित की गई है। उन्होंने कहा कि गुजरात में अब तक औसत वार्षिक वर्षा का 108 प्रतिशत बारिश हुई है। राज्य राहत आयुक्त के अनुसार बारिश से प्रभावित जिलों में अस्थायी और स्थायी मकानों को हुए नुकसान का आकलन करने के लिए सर्वेक्षण किया जा रहा है, जिसमें आंशिक रूप से या नष्ट हुए मकान भी शामिल हैं। 4,673 प्रभावित मकानों और झोपड़ियों के मालिकों को 3.67 करोड़ रुपये की सहायता राशि वितरित की गई है। प्रभावित परिवारों और लोगों की संख्या के बारे में विवरण उपलब्ध होने पर जिला प्रशासन घरेलू सामान के नुकसान और आपातकालीन नकद राहत के लिए आगे के भुगतान की प्रक्रिया जारी रखेगा। राज्य के वडोदरा, सूरत, राजकोट, आणंद, कच्छ, खेड़ा, गांधीनगर, जामनगर, देवभूमि द्वारका, नर्मदा, नवसारी, पोरबंदर, मोरबी और वलसाड जिलों में 1,120 टीमों की तरफ सर्वेक्षण कार्य किया जा रहा है। जबकि इन जिलों में अब तक 1.69 लाख से अधिक लोगों को 8.04 करोड़ रुपये की नकद राहत वितरित की गई है। अब तक इन जिलों में 50,111 प्रभावित परिवारों को घरेलू और वस्त्र सहायता के रूप में 20.07 करोड़ रुपये वितरित किए गए हैं।

भारी बारिश के मद्देनजर तमाम तैयारियां

वहीं राज्य में भारी बारिश के मद्देनजर, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) की 17 टीमें, राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ) की 27 टीमें, सेना की नौ टुकड़ियां और भारतीय वायुसेना के साथ-साथ तटरक्षक बल की अतिरिक्त टीमें तैनात की गई हैं। उन्होंने बताया, इन टीमों ने 37,050 लोगों को सफलतापूर्वक बचाया है और 42,083 अन्य लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया है। इसके अलावा, 53 लोगों को सुरक्षित हवाई मार्ग से निकाला गया है।

उत्तराखंड के सीएम को सुप्रीम कोर्ट ने सुनाई खरी-खरी, कहा- अब वैसा समय नहीं कि जैसा राजा बोले वही हो

नई दिल्ली (एजेंसी)। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को कहा कि सरकार के प्रमुखों से 'पुराने जमाने के राजा' होने की उम्मीद नहीं की जा सकती और हम 'सामंती युग' में नहीं हैं। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से सवाल किया कि उन्होंने राज्य के वन मंत्री और अन्य की लोगों राय की अनदेखी करते हुए एक भारतीय वन सेवा (आईएफएस) अधिकारी को राजाजी टाइगर रिजर्व का निदेशक नियुक्त किया।

राज्य सरकार ने 3 सितंबर को वापस लिया आदेश

हालांकि, राज्य सरकार ने न्यायमूर्ति बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ को बताया कि भारतीय वन सेवा (आईएफएस) अधिकारी को टाइगर रिजर्व का निदेशक नियुक्त करने का आदेश 3 सितंबर को वापस ले लिया गया था। कॉर्बेट टाइगर रिजर्व के पूर्व निदेशक आईएफएस अधिकारी राहुल को राजाजी टाइगर रिजर्व का निदेशक नियुक्त किये जाने से संबंधित मामले की सुनवाई कर रही इस पीठ में न्यायमूर्ति पीके मिश्रा और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन भी शामिल थे।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि प्रथम अधिकारी की ओर से एक विशेष टिप्पणी थी, जिसका उप सचिव, प्रमुख सचिव और राज्य के वन मंत्री ने भी समर्थन किया था कि आईएफएस अधिकारी राहुल को राजाजी टाइगर रिजर्व के निदेशक के रूप में नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए। पीठ ने कहा, इस देश में सार्वजनिक विश्वास सिद्धांत जैसा कुछ है। कार्यपालिका के प्रमुखों से पुराने दिनों के राजा होने की उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे जो भी कहेंगे, वही करेंगे। हम सामंती युग में नहीं हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने पूछा- सीएम को उनसे विशेष स्नेह क्यों?

इस दौरान पीठ ने पूछा, मुख्यमंत्री को उनसे (आईएफएस राहुल) विशेष स्नेह क्यों होना चाहिए? क्या सिर्फइसलिए कि वे मुख्यमंत्री हैं, तो वो कुछ भी कर सकते हैं?। जबकि पीठ ने ये भी पाया कि आईएफएस अधिकारी के खिलाफ अभी विभागीय कार्यवाही लंबित है। वहीं विशेष टिप्पणी का जिक्र करते हुए पीठ ने कहा कि मुख्यमंत्री बस इसे अनदेखा कर रहे हैं।

वहीं राज्य की ओर से कोर्ट में मौजूद वरिष्ठ अधिवक्ता एएनएस नादकर्णी ने कहा कि अधिकारी पर राज्य पुलिस या केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) या प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की तरफसे दर्ज कोई एफआईआर दर्ज नहीं है। वकील ने कहा कि अधिकारी के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही कॉर्बेट टाइगर रिजर्व से संबंधित थी, जहां कई अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। बता दें कि सुनवाई के दौरान, पीठ ने एक समाचार पत्र की रिपोर्ट का भी हवाला दिया, जिसमें कहा गया था कि उत्तराखंड के वन मंत्री और मुख्य सचिव ने राजाजी टाइगर रिजर्व के निदेशक के रूप में अधिकारी की नियुक्ति पर आपत्ति जताई थी।

सचिन खिलाड़ी ने पुरुषों की गोला फेंक स्पर्धा में जीता रजत, भारत के पदकों की संख्या 21 पहुंची

पेरिस(एजेंसी)। भारत ने बुधवार को पदकों का खाता पुरुषों की स्न46 गोला फेंक स्पर्धा में खोला। सचिन सरजेराव खिलाड़ी ने 16.32 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ रजत पदक अपने नाम किया। सचिन बस 0.06 मीटर से स्वर्ण पदक चूक गए। सचिन ने दूसरे प्रयास में ही 16.32 मीटर का थ्रो किया था। हालांकि, वह इससे ऊपर निकलन में कामयाब नहीं हो सके। कनाडा के ग्रेग स्टीवर्ट ने 16.38 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इस स्पर्धा में भारत के मोहम्मद यासेर आठवें और रोहित कुमार नौवें स्थान पर रहे।

गोला फेंक के फाइनल में सचिन का पहला प्रयास 14.72 मीटर, दूसरा प्रयास 16.32 मीटर, तीसरा प्रयास 16.15 मीटर, चौथा प्रयास 16.31 मीटर, पांचवां प्रयास 16.03 मीटर और छठा (आखिरी) प्रयास 15.95 मीटर का रहा। उन्होंने 16.32 मीटर के थ्रो के साथ एरिया रिकॉर्ड भी बनाया। यह भारत का पेरिस पैरालंपिक 2024 में 21वां पदक रहा। सचिन ने 2023 विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पुरुषों की शॉट पुट एफ46 स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता था।उन्होंने 16.21 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ पदक अपने नाम किया था। उन्होंने 2024 विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में भी भाग लिया , जिसमें उन्होंने इसी स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता था।

छत्तीसगढ़ को मिली 8 लाख 46 हजार 931 प्रधानमंत्री आवासों की स्वीकृति : मुख्यमंत्री साय

रायपुर (समय दर्शन)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपने निवास कार्यालय में प्रेस से बात करते हुए बताया कि छत्तीसगढ़ को भारत सरकार द्वारा 8 लाख 46 हजार 931 प्रधानमंत्री आवासों की स्वीकृति प्राप्त हुई है। उन्होंने इसे प्रदेश के लिए एक बड़ी उपलब्धि बताते हुए कहा कि इससे लाखों गरीब परिवारों को अपने सिर पर छत का सपना साकार करने में मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने बताया कि पिछले 5 वर्षों में छत्तीसगढ़ के 18 लाख से अधिक गरीब परिवार प्रधानमंत्री आवास योजना से वंचित रह गए थे क्योंकि तत्कालीन सरकार ने इस योजना के लिए आवश्यक राज्यांश 40 प्रतिशत जमा नहीं किया था। इस वजह से इन गरीब परिवारों का हक छीना गया था। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारी सरकार ने 13 दिसंबर 2023 को शपथ ली और अगले ही दिन 14 दिसंबर को हमारे पहले कैबिनेट बैठक में 18 लाख प्रधानमंत्री आवासों की स्वीकृति प्रदान कर दी गई। राज्यांश की व्यवस्था भी तुरंत की गई। मुख्यमंत्री ने आगे बताया कि नए वित्तीय वर्ष के बजट में छत्तीसगढ़ को 8 लाख 46 हजार 931 प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति भारत सरकार से मिली है, जिसमें एसईसीसी 2011 के अंतर्गत 6 लाख 99 हजार 331 आवास और 1 लाख 47 हजार 600 आवास प्लस शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद दिया और कहा कि मैं छत्तीसगढ़ के 3 करोड़ जनता और विशेषकर प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभान्वित होने वाले सभी लोगों की तरफ से प्रधानमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा और दुर्ग विधायक गजेंद्र यादव उपस्थित थे।

इसके साथ ही मुख्यमंत्री श्री साय ने प्रधानमंत्री जनमन योजना का भी जिक्र किया करते हुए कहा कि विशेष पिछड़ी जनजाति जिन्हें राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र भी कहते हैं उनके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 24 हजार 64 आवास की स्वीकृति की गई है, जिनमें से कई पूर्ण हो चुके हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि जनवरी से लेकर अब तक 1 लाख 99 हजार प्रधानमंत्री आवासों का निर्माण किया जा चुका है और मोदी जी की गारंटी के अनुसार 18 लाख आवासों का निर्माण समयबद्ध रूप से पूरा किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि निय्यद नेलानार योजना आपका अच्छा गांव के अंतर्गत छत्तीसगढ़ में नक्सल प्रभावित और आत्मसमर्पित नक्सलियों के लिए भी प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 10,000 से अधिक अतिरिक्त आवासों की स्वीकृति के लिए ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मांग की गई है.

संक्षिप्त समाचार

बिंदिया कार्यक्रम में आभा श्रीवास्तव की रचनाओं का प्रसारण आज

राजनांदगांव। अंचल की वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती आभा श्रीवास्तव की रचनाओं का प्रसारण रेडियो आकाशवाणी से कल गुरूवार, 5 सितंबर को प्रसारण किया जावेगा। दोपहर 1 बजे से रेडियो में प्रसारित होने वाले लोकप्रिय कार्यक्रम बिंदिया के अंतर्गत काव्य सौरभ कविता-पाठ में श्रीमती आभा श्रीवास्तव की रचनाओं नारी, परिवर्तन नहीं होता, सावन, राही आदि कवितायें एमडब्ल्यू 981 केएचजेड एंड 101.6 एमजेडएच पर प्रसारित होंगी। उल्लेखनीय हो कि साप्ताहिक समाचारपत्र उजला आकाश की संपादक व साहित्यकार श्रीमती आभा श्रीवास्तव पूर्व में भी आकाशवाणी, दूरदर्शन के कार्यक्रम में सम्मिलित व प्रसारित हो चुकी हैं। इसके साथ ही विभिन्न साहित्यिक संगोष्ठियों, सम्मेलनों आदि कार्यक्रमों में सम्मिलित हो चुकीं श्रीमती आभा श्रीवास्तव की प्रकाशित व बहुप्रशंसित कृतियां पगडण्डी, अग्रगामी, सफ़र, वस्तुस्थिति, पलाश के रंग, शंकर, भारत, अभिनंदन, आंख का तारा, छत्तीसगढ़: तब और अब तथा श्रद्धांजलि आदि हैं।

कलेक्टर ने नशा मुक्त भारत अभियान के संबंध में संयुक्त विभागीय बैठक ली

सारंगढ़ बिलाईगढ़ (समय दर्शन)। समाज कल्याण विभाग के तत्वाधान में नशा मुक्त भारत अभियान अंतर्गत कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू ने जिला स्तरीय समिति की बैठक ली। बैठक में जिले की नशा मुक्ति संबंधी कार्ययोजना के अधीन विभागवार दायित्वों के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई। कलेक्टर ने दवाई दुकानों और अन्य संदिग्ध स्थानों में विभागीय जांच और संयुक्त रूप से जांच करने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए। बैठक में पुलिस अधीक्षक, वनमंडल अधिकारी, परियोजना निदेशक पंचायत एवं ग्रामीण विकास, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, उप संचालक समाज कल्याण, आबकारी अधिकारी, प्रभारी महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र, एसडीएम, एसडीओपी, उप संचालक अभियोजन, नियंत्रक खाद्य एवं औषधि प्रशासन के अधिकारी, यातायात एवं परिवहन अधिकारी, कार्यक्रम अधिकारी महिला बाल विकास, सभी नगरपालिका अधिकारी, एसडीओ राष्ट्रीय राजमार्ग व लोक निर्माण विभाग, नोडल अधिकारी पशुधन विकास विभाग, जिला शिक्षा अधिकारी और सभी तहसीलदार उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि समाज कल्याण विभाग ने इस अभियान के संबंध में अगस्त माह में भी जनपद पंचायत सारंगढ़ के सभाकक्ष में बैठक आयोजित की गई थी। प्रभारी अधिकारी समाज कल्याण विनय तिवारी के द्वारा नशा मुक्ति अभियान के संबंध में विस्तार से बताया गया और नशा मुक्ति के संबंध में शपथ संकल्प दिलाया गया।

पाटन ब्लॉक के युवा पत्रकार किशन हिरवानी पर किया हमला

दुकान में बैठकर काम कर रहे थे तभी किया हमला, सिर में आई चोट

सेलूद (समय दर्शन)। पत्रिका के पत्रकार और साहू समाज के तहसील मीडिया प्रभारी किशन हिरवानी पर आज कुछ युवाओं के जानलेवा हमला कर दिया। जानकारी के मुताबिक किशन हिरवानी सेलूद बजरंग चौक में स्थित अपने फोटो स्टूडियो में काम कर रहा था। तभी एक युवक मुंह में गमछा बांधे आए ओर ताबड़तोड़ हमला कर दिया। बताया जा रहा है की उक्त युवक पेन कार्ड बनवाने के बहाने दुकान पर पहुंचा था। पुलिस को सूचना देने के बाद पुलिस भी तत्काल चारो तरफ पुलिस की पेट्रोलिंग टीम हमलावर को पता साजी कर रही है। इस घटना में किशन हिरवानी के सिर में चोट आई है।

महिला सुरक्षा व क्राइम कंट्रोल में भाजपा सरकार फेल : कांग्रेस

राजनांदगांव (समय दर्शन)। प्रदेश में आए दिन महिलाओं के साथ अत्याचार व गैंगरेप की घटनाएं बढ़ रही है। रोजाना कहीं न कहीं सामूहिक बलात्कार की घटनाएं घट रही है। माताएं-बहनें, बेटियां अपने आपको असुरक्षित महसूस कर रही है। कानून व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। प्रदेश की सायं सरकार मूकदर्शक बनी हुई है। 9 माह में ही भाजपा सरकार के राज में छत्तीसगढ़ में महिलाएं असुरक्षित हो गयी है। रोजाना प्रदेश में कहीं न कहीं सामूहिक बलात्कार की घटनाएं घट रही है, जिसको लेकर शहर जिला कांग्रेस व ग्रामीण कांग्रेस कमेटी के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार 3 सितंबर को महावीर चौक पर महिला सुरक्षा जिला स्तरीय एक दिवसीय मौन धरना-प्रदर्शन किया गया।

जानकारी देते हुए शहर कांग्रेस कमेटी के महामंत्री अमित चंद्रवंशी ने बताया कि प्रदेश में महिलाओं पर बढ़ रही अत्याचार व सामूहिक बलात्कार की घटना से पूरे प्रदेश सहम गया है। प्रदेश की राजधानी में भी महिलाएं अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रही है। दुर्भाग्यजनक बात है कि प्रदेश की भाजपा सरकार को इससे कोई सरोकार नहीं है। प्रदेश में कानून नाम की कोई चीज नहीं है। इस मामले में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज के निर्देशानुसार शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष कुलबीर सिंह छाबड़ा व जिला ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष भागवत साहू के संयुक्त तत्वावधान में कांग्रेस पार्टी ने निर्णय लिया है कि हम अपनी बहन-बेटियों की रक्षा की लड़ाई लड़ेंगे, आंदोलन करेंगे।

शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष कुलबीर सिंह छाबड़ा ने कहा कि बड़े ही शर्म की बात है कि 08 माह में ही भाजपा राज में कानून नाम की कोई चीज नहीं बची है। इससे बड़ा दुर्भाग्यजनक क्या हो सकता है कि राजधानी में महिलायें सुरक्षित नहीं है। रायपुर नया बस स्टैंड में एक महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म होता है, दूसरे दिन रिपोर्ट लिखा गया उसमें भी सामूहिक दुष्कर्म को नकार दिया गया। बलात्कार का रिपोर्ट लिखा गया, यहां भी पुलिस अपराधियों को सजा देने के बजाय उन्हें बचाने में लगी है। महिलायें खुले में बाहर निकलने में भयभीत हो रही है।

जिला ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष भागवत साहू ने बताया कि प्रदेश की भाजपा सरकार पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि जब से प्रदेश में भाजपा की सरकार आयी है तब से भ्रष्टाचार, माफीराज को बढ़ावा मिल रहा है। आज हमारी बहन-बेटियां महफुज़ नहीं है, मात्र 8 माह की भाजपा सरकार में 600 जैसी बलात्कार की घटना होना कोई कम बात है। मैं पूछना चाहता हूं कि प्रदेश में हो रही लगातार इस तरह की घटना में सरकार ने क्या कार्यवाही किया? रायगढ़ के पुसौर में एक आदिवासी महिला के साथ 14 लोगों ने दुराचार किया, पुलिस रिपोर्ट लिखने में बहानेबाजी कर रही थी, मीडिया में दबाव के बाद रिपोर्ट लिखा गया।

मौन प्रदर्शन में प्रमुख रूप से पूर्व मंत्री धनेश पाटिला, डोंगरगढ़ विधायक हर्षिता स्वामी बघेल, महापौर हेमा देशमुख, कमलजीत सिंह पिन्टू, कुतबुद्दीन सोलंकी, पूर्व विधायक भुनेश्वर बघेल, पदम कोठारी, मोती साहू, पीसीसी सचिव मेहुल मारू, रमेश डाकलिया, रमेश खंडेलवाल, शहर कांग्रेस उपाध्यक्ष शारदा तिवारी, मोहम्मद यहया, झम्मन देवांगन, नासिर जिंदरान, नरेश शर्मा, हनी ग्रेवाल, महिला ग्रामीण अध्यक्ष श्रीमती रामक्षत्री चंद्रवंशी, महिला कांग्रेस अध्यक्ष माया शर्मा, राजकुमारी सिन्हा, मोहिनी सिन्हा, प्रज्ञा गुप्ता, पार्षद संतोष पिल्ले, हमीन हुद्दा, पूर्णिमा नागदेवे, मधुकर वंजारी, भागचंद साहू, चेतन चौधरी सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसजन उपस्थित थे।

जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष संतोष सोनवानी हुए भाजपा में शामिल

बिलाईगढ़ (समय दर्शन)। पूरे देश में भारतीय जनता पार्टी के द्वारा सदस्यता अभियान का शुभारंभ हो चुका है इसी के तहत सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले में आज बुधवार को भाजपा के द्वारा सदस्यता अभियान का शुभारंभ भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष शिवरतन शर्मा के द्वारा किया गया वही इस कार्यक्रम में भाजपा जिला प्रभारी निर्मल सिंहा, भाजपा जिला अध्यक्ष सुभाष जालान समेत बड़ी संख्या में भाजपा नेतागण उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष संतोष सोनवानी ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ली भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष शिवरतन शर्मा ने संतोष सोनवानी को फूल माला पहनाकर भारतीय जनता पार्टी के सदस्यता दिलाई । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष शिवरतन शर्मा ने कहा की 2014 में हमने 11 करोड़ सदस्य बनाए थे और हमारी पार्टी विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनी इसी प्रकार 2024 में पार्टी ने 10 करोड़ सदस्य बनाने का लक्ष्य रहा है जिसको हम सबको मिलकर पूरा करना है बात करे सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले की तो यहां 1 लाख 51 हजार सदस्य बनाए का लक्ष्य है और निश्चिंत ही हमे सफ्लता हाथ लगेगा ।

विधानसभा चुनाव में 32 प्रत्याशियों की सूची जारी कर आए थे चर्चा में- प्रदेश में हुए विधानसभा चुनाव में जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष संतोष सोनवानी के द्वारा अलग-अलग विधानसभा में 32 प्रत्याशियों की सूची जारी की थी जिसके बाद छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस जोगी के प्रत्याशियों की सूची का अफवाह फैला था जिस पर छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस जोगी के सुप्रीमो अमित जोगी को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर स्पष्टीकरण देना पड़ गया था। यह बताना लाजिमी होगा कि अमित जोगी की पार्टी और जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ पार्टी दोनों अलग-अलग पार्टी है।

भाजपा सदस्यता अभियान को लेकर प्रेस वार्ता हुई, कहा पीएम आवास राशि कुछ ही दिनों में हितग्राही के खाते में होगा - शिवरतन शर्मा

सारंगढ़ (समय दर्शन)। भारतीय जनता पार्टी 2 तारीख से सदस्यता अभियान शुरू कर दिया है जिसमे बहुत बड़ी लक्ष्य के साथ भारत में सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया गया उसी कड़ी के सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिला में भाजपा के छत्तीसगढ़ प्रदेश उपाध्यक्ष शिवरतन शर्मा ने प्रेस वार्ता कर सदस्यता अभियान की जानकारी दी और बताया की मोदी जी 8 करोड़ लोगो को सदस्यता अभियान के तहत शामिल कारने का लक्ष्य रखा है एक निचले स्तर मे प्रत्येक पोलिंग बूथ में 200 लोगो को भाजपा की सदस्यता दिलाकर शामिल करने की अपील किया साथ ही पत्रकार वार्ता में पत्रकारों ने स्थानीय मुद्दों को लेकर भी चर्चा किया गया जिसमे शर्मा ने आश्वासन देते हुए कहा की हमारी सरकार ने जिन भी घोषणा को चुनाव में शामिल किया है उसे 5 साल के भीतर अवश्य पूरा किया जायेगा विशेष तौर पर 5 घोषणा था जिसमे किसान, महतारी, आवास ,जैसे कई बड़े बजट को पहले ही पूरा कर दिया और आगामी दिनों में सभी घोषणा और मुद्दो को ध्यान में रखा गया है अभी तो महज 8 से 9 महीने हुए है देखते जाए समय के साथ सब कुछ होगा आगे कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना की स्वीकृति के बाद ही मुख्यमंत्री आवास में रहने की बात कही थी और आज स्वीकृति के बाद साय जी मुख्यमंत्री आवास में गए और सरकार दो तीन दिनों में आवास का राशि जारी करेगी ।

भाजपा का प्रेस वार्ता में शामिल हुए भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष शिवरतन शर्मा, सुभाष जालान, अजय गोपाल, श्रीमती केरा बाई मनहर, पुनीत चौहान,दिनेश लाल जांगड़े, ज्योति पटेल, टीका राम पटेल व अन्य भाजपाई उपस्थित रहे।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी सह जनरल सेक्रेटरी एम.के. राउत ने की रेडक्रॉस की गतिविधियों की समीक्षा

रेडक्रॉस समिति में ज्यादा से ज्यादा सदस्यता बढ़ाने पर जोर

देह दान देने वाले सुभाष गिरी गोस्वामी को किया सम्मानित

महासमुंद (समय दर्शन)। राज्य रेडक्रॉस के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सह जनरल सेक्रेटरी एम.के. राउत की अध्यक्षता में आज जिला पंचायत के सभाकक्ष में जिला रेडक्रॉस पदाधिकारियों की बैठक हुई। बैठक में राज्य रेडक्रॉस सोसायटी के चेयरमेन अशोक अग्रवाल, कलेक्टर विनय कुमार लंगेह मौजूद थे। बैठक में रेडक्रॉस के मुख्य कार्यपालन अधिकारी और जनरल सेक्रेटरी, एम.के. राउत एवं पदाधिकारियों का स्वागत रेडक्रॉस इकाई कॉलेज की वालेंटियर छात्राओं ने रेडक्रॉस के ध्वज गीत द्वारा अभिनंदन किया गया।

बैठक में राउत ने कहा कि रेडक्रास का उद्देश्य सेवाभाव को बढ़ावा देना है। इसके लिए सभी महाविद्यालयों में रेडक्रॉस के संबंध में कार्यक्रम आयोजित कर रक्तदान और अन्य गतिविधियां आयोजित करने, प्रबंध समिति के लिए चुनाव कराने हेतु तिथि, स्थान, समय निर्धारित कर समिति के सदस्यों का चयन 30 सितंबर तक करने कहा। उन्होंने रेडक्रॉस सोसायटी में जनप्रतिनिधियों सहित हाईस्कूल से लेकर कॉलेज के छात्र-छात्राओं को सदस्य बनाने पर जोर दिया ताकि सदस्यों के मन में दुर्घटना व आपदा के दौरान पीड़ितों की सहायता, मानवता और निष्पक्षता की भावना पैदा हो। उन्होंने रेडक्रॉस के कार्यों ३को और अधिक विस्तृत करने हेतु उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों, पुलिस विभाग में खासकर नगर सैनिक, यातायात पुलिस, ग्राम पंचायत स्तर पर सचिव, पंच-सरपंच को जोड़ने के साथ ही उन्हें फर्स्ट एड (प्राथमिक चिकित्सा) की जानकारी व रेड क्रॉस से संबंधित कार्यों से अवगत कराने हेतु सम्बंधित अधिकारियों से कहा। ताकि मरीज को सही समय में मदद मिल सके और समय की बचत हो।

कलेक्टर लंगेह ने बैठक में पीपीटी के माध्यम से जिले में संचालित रेडक्रॉस सोसाइटी के गतिविधियों के विषय में जानकारी देते हुए बताया कि जिले के 188 शासकीय, 82 अशासकीय हाई व हायर सेकेंडरी स्कूलों में जूनियर रेडक्रॉस प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिले में 17 समस्त महाविद्यालयों में यूथ रेड क्रॉस इकाइयों का गठन किया गया है। वहीं जिले में 251 लोगों को आजीवन सदस्य बनाया गया है। उन्होंने बताया कि टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत 342 नि:क्षय मित्र बनाए गए हैं। उन्होंने रेडक्रॉस द्वारा संचालित दवा दुकान, ब्लड बैंक के सम्बंध में विमर्श किया। इसके साथ ही जिले में सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है।

रेडक्रॉस के कार्यों और गतिविधियों से प्रभावित होकर सुभाष गिरी गोस्वामी ने देह दान करने की घोषणा की थी। उनके इस मानवीय पहल के लिए रेडक्रॉस के जनरल सेक्रेटरी व चेयरमेन सहित सभी सदस्यों ने मानवता की अद्भुत मिशाल पेश करने के लिए गोस्वामी को शॉल, श्रीफल और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। बैठक में रेड क्रॉस सोसायटी की सभापति श्रीमती अनिता रावटे, उपसभापति दाऊलाल चंद्राकर, श्रीमती रश्मि चंद्राकर सदस्य, सीईओ जिला पंचायत श्री एस. आलोक, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. पी. कुदेशिया, जिला रेडक्रॉस समिति के सदस्य व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार 2023 के लिए सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले की शिल्पी हीराबाई झरेका बघेल का हुआ चयन

छत्तीसगढ़ से राष्ट्रीय स्तर पर एकमात्र चयनित शिल्प कलाकार

सारंगढ़ बिलाईगढ़ (समय दर्शन)। सारंगढ़ बिलाईगढ जिले को एक बार पुन: गौरवान्वित होने का अवसर प्राप्त हुआ है। जिला मुख्यालय सारंगढ़ के वनांचल ग्राम पंचायत बैगीनडीह ढोकरा बेलमेटल शिल्पी कला के लिए शिल्पकार हीराबाई झरेका बघेल का छत्तीसगढ़ से राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार के लिए चयन हुआ है। इस खबर से पूरे अंचल के क्षेत्रवासियों में खुशी की लहर है। कलेक्टर धर्मेश साहू सहित पत्रकारों, सरपंच व सभी शुभचिंतकों ने शिल्पकार हीराबाई झरेका बघेल को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उल्लेखनीय है कि ढोकरा बेल मेटल शिल्प कला के क्षेत्र में पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश से राष्ट्रीय स्तर पर अवार्ड मिलने पर पूरा जिला गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

सारंगढ़ जनपद पंचायत के वनांचल ग्राम पंचायत बैगीनडीह के ढोकरा बेल मेटल शिल्पी कलाकारों की कला जो कि आज पूरे छत्तीसगढ़ ही नहीं वरन पूरे भारत देश के साथ ही विदेश में भी सारंगढ़ बिलाईगढ जिला के ढोकरा बेल मेटल शिल्प शिल्पियों की कलाकारी का डंका बजा चुके हैं जिसमें इसके पूर्व भी वनांचल ग्राम पंचायत बैगीनडीह के रहवासी को सम्मानित किया गया है। अब एक बार फिर पूरे छत्तीसगढ़ से सारंगढ़ बिलाईगढ जिला को गौरवान्वित करते हुए ढोकरा बेल

मेटल शिल्प कला के क्षेत्र में ?वनाचल ग्राम पंचायत बैगीनडीह की श्रीमती हीराबाई झरेका बघेल को ढोकरा बेल मेटल शिल्प कला के क्षेत्र में विकास आयुक्त हस्त शिल्प वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार दिल्ली के द्वारा पूरे प्रदेश से ढोकरा बेल मेटल शिल्प कला के क्षेत्र में नेशनल अवार्ड के लिए चयनित किया गया है व साथ ही इसके पूर्व भी इनके पति मिनकेतन बघेल को भी बेल मेटल शिल्प कला के क्षेत्र में महारत हासिल किए हुए हैं जो ना सिर्फ छत्तीसगढ़ में ही नहीं वरन पूरे भारत देश के अलावा विदेश में भी सारंगढ़ बिलाईगढ जिला का मान बढ़ाते हुए अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं। इसके पूर्व भी हीराबाई झरेका बघेल को बेलमेटल शिल्प कला के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा वर्ष 2011-12 में पुरुस्कृत किया गया जा चुका है। इनके पति मिनकेतन को भी वर्ष 2006-07 में छत्तीसगढ़ के तात्कालिक राज्यपाल व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह के द्वारा सम्मानित किया गया था व साथ ही प्रशासनिक खर्चे पर ही वर्ष 2018 और 2022 में विदेश यात्रा कर छत्तीसगढ़ की बेल मेटल शिल्प कला का बखूबी प्रदर्शन किया गया है।

पुरस्कार के लिए चयनित शिल्पी हीराबाई झरेका बघेल ने कहा कि मेरे पिता व पति ही मेरी प्रेरणास्रोत है। कला के क्षेत्र में मुझे मेरे पिता भुलाऊ झरेका जो कि मेरे लिए प्रेरणा है व मेरे को जो आज राष्ट्रीय स्तर पर पुरुस्कार मिल रहा है। उसका श्रेय मेरे पिता जी को जाता है क्योंकि उन्ही के द्वारा मुझे ढोकरा बेल मेटल शिल्प कला को सिखाया गया है। वहीं इस ओर आगे बढ़ने के साथ ही ही कुछ नया करने व आगे बढ़ने की प्रेरणा विवाह के बाद शुरू से ही मुझे मेरे पति मिनकेतन बघेल प्रेरित करते रहे हैं, जिससे मुझे यह गौरव प्राप्त हुआ है।

तात्कालिक एसडीएम अनिकेत साहू व सचिव बलभद्र पटेल का रहा विशेष सहयोग : चयनित शिल्प कलाकार हीराबाई झरेका बघेल- ढोकरा बेल मेटल शिल्प कला के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ प्रदेश से एक मात्र चयनित हुई हीराबाई झरेका बघेल ने बताया कि इस अवार्ड के लिए कई तरह की प्रशासनिक कागजी कार्यवाही की जरूरत पड़ी, जिसमें मुझे सारंगढ़ के तात्कालिक अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनिकेत साहू का विशेष सहयोग मिला व साथ ही मेरी जाति प्रमाण पत्र से लेकर अब तक मुझे व मेरे परिवार को ?विशेष रुप से आज पर्यन्त तक मेरे ग्राम पंचायत बैगीनडीह के सचिव बलभद्र पटेल का सहयोग प्राप्त होता रहा है जिनके सहयोग के चलते ही मैं राष्ट्रीय स्तर पर पुरुस्कृत होने वाली हूं।

सार समाचार

सूने मकान से हजारों रुपए के जेवर पार

रायपुर(समय दर्शन)। बालाजीपुम स्थित सूने मकान का ताला तोड़कर अज्ञात चोर आलमारी में रखे सोने-चांदी के जेवर पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर आरंग पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी शशि प्रसाद 35 वर्ष 35 वर्ष बालाजीपुम आरंग का रहने वाला है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि अज्ञात चोर ने उसके सूने मकान का ताला तोड़कर आलमारी में रखे सोने-चांदी के जेवर पार कर दिया। चोरी गए जेवर की कीमत करीब 20 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। प्रार्थी की शिकायत पर मौदहापारा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

शासकीय अस्पताल से बाइक पार

रायपुर(समय दर्शन)। मेकाहारा परिसर स्थित चीर घर के पास खड़ी बाइक को अज्ञात चोर ने पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर मौदहापारा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी यशवंत सिन्हा 30 वर्ष भरत नगर गुढ़ियारी का रहने वाला है। प्रार्थी ने मौहदापारा थाना में शिकायत किया कि वह अपनी बाइक क्रमांक सीजी 04 एमडब्ल्यू 6238 को मेकाहारा परिसर स्थित चीरघर के पास खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए बाइक की कीमत करीब 15 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। प्रार्थी की शिकायत पर मौदहापारा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

सरेआम शराब पीते 14 लोग गिरफ्तार

रायपुर(समय दर्शन)। राजधानी पुलिस ने नशेड़ियों के खिलाफ अभियान चलाकर सरेआम शराब पीते 14 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की है। मिली जानकारी के अनुसार खम्हारडीह पुलिस ने कचना मेन रोड में दबिश देकर राजेन्द्र प्रसाद तिवारी 45 वर्ष एवं खमतराई पुलिस ने आरोपी राजेश साहू 38 वर्ष व संजय साव 30 वर्ष को गिरफ्तार किया है। वहीं खरोरा पुलिस ने टिकेश्वर वर्मा 25 वर्ष एवं आरंग पुलिस ने आरोपी विवेक छतर 33 वर्ष, मुकेश कुमार बघेल 20 वर्ष व संतोष यादव 36 वर्ष को गिरफ्तार किया है। इसी तरह माना पुलिस ने आरोपी रामाधर निषाद 40 वर्ष व नंदकुमार निषाद 35 वर्ष को गिरफ्तार किया है। वहीं विधानसभा पुलिस ने टिकेश्वर प्रसाद लहरे 35 वर्ष, अभिषेक शर्मा 25 वर्ष व प्रवीण लहरे 20 वर्ष को गिरफ्तार किया है।

चिरायु टीम स्कूलों का भ्रमण कर बिमारियों से प्रभावित बच्चों का कर रहे चिन्हांकन

मुख्यमंत्री स्वास्थ्य और शिक्षा पर दे रहे हैं विशेष जोर

गंभीर बच्चों को उच्च स्तरीय ईलाज की दी जा रही सुविधा

रायपुर(समय दर्शन)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, दूरस्थ अंचल के बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए हैं। इसके तहत, स्वास्थ्य विभाग की 'चिरायु' टीम द्वारा स्कूलों का दौरा कर गंभीर बीमारियों से प्रभावित बच्चों का चिन्हांकन किया जा रहा है और उन्हें उच्च स्तरीय इलाज की सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसी कड़ी में जशपुर जिले के स्वास्थ्य विभाग के चिरायु दल द्वारा स्कूलों में जाकर छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य परीक्षण किया जा रहा है। परीक्षण उपरांत बीमारी से प्रभावित बच्चों को सुविधानुसार नि:शुल्क दवाइयाँ और उच्च स्तरीय ईलाज की सुविधा दी जा रही है। चिरायु टीम ने हाल ही में पत्थलगांव विकासखण्ड के शासकीय प्री मैट्रिक कन्या एवं बालक छात्रावास लुडेग में स्वास्थ्य परीक्षण अभियान चलाया। इस दौरान कुल 21 बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, जिनमें 6 बच्चों को आंखों से संबंधित समस्याएं, 11 को त्वचा संबंधी रोग, 2 बच्चे को पेट दर्द, और 2 अन्य बीमारियों से ग्रस्त पाये गये। चिरायु टीम ने इन सभी बच्चों को आवश्यक इलाज और दवाइयों की सुविधा प्रदान की। साथ ही उन्हें स्वास्थ्य शिक्षा भी दी गई, जिसमें साफ-सफाई रखने, मच्छरदानी का उपयोग करने, उबला हुआ पानी पीने और बरसात के मौसम में होने वाली मौसमी बीमारियों से बचाव के उपायों के बारे में बताया गया। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने स्वास्थ्य विभाग के अमले को निर्देश दिए है कि इस अभियान को और अधिक व्यापक बनाना सुनिश्चित करें। ताकि राज्य के सभी दूरस्थ क्षेत्रों के बच्चों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें।

मनरेगा की एक छोटी सी मदद से मिली उन्नति की नई राह - कृषक बीरसाय

रायपुर(समय दर्शन)। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत् पंजीकृत श्रमिकों को न केवल रोजगार उपलब्ध कराए जा रहे हैं, बल्कि आजीविका के नए-नए साधन एवं सुविधाएं भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। मनरेगा से किसान बीरसाय की कृषि भूमि उपजाऊ बनी, जिससे वह सब्जी की खेती कर अपनी आय बढ़ा रहा है। मनेन्द्रगढ़-भरतपुर-चिरमिरी जिले के ग्राम पंचायत लाई में रहने वाले पंजीकृत श्रमिक श्री बीरसाय के पास जो भूमि थी, वह काफी उबड़-खाबड़ या कहें किसानी के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त थी, उन्होंने ग्राम पंचायत से अपनी भूमि के समतलीकरण का कार्य कराए जाने हेतु आवेदन किया। उनके आवेदन को ग्राम पंचायत में आहूत ग्राम सभा के प्रस्ताव पारित होने के बाद जिला पंचायत कोरिया से स्वीकृत किया गया। कुल 95 हजार रूपए से होने वाले इस भूमि सुधार कार्य के लिए ग्राम पंचायत लाई को एजेंसी का दायित्व दिया गया। यहां श्री बीरसाय ने स्वयं अपने गांव के अन्य श्रमिकों के साथ अपनी असमतल भूमि को कृषि के योग्य बनाया और इसकी मेढ़बंदी कराई। इस कार्य से उन्हें सौ दिवस का रोजगार भी प्राप्त हुआ जिसकी मजदूरी सीधे उनके खातों में पहुंची। कृषि योग्य भूमि बन जाने के पश्चात् शासन से उन्होंने सब्जी उत्पादन के लिए मिलने वाली टपक सिंचाई योजना के साथ मल्चिंग खेती का लाभ लिया। अपने खेतों में बेहद कम पानी से होने वाली व्यवस्था बनाकर सब्जी की खेती प्रारंभ की। उसके पश्चात् श्री बीरसाय अपनी मेहनत से लगातार हर मौसम में अलग-अलग सब्जी उगाकर लगभग हर माह 10 से 15 हजार रुपए की आमदनी प्राप्त कर रहा है, इससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत होने लगी है। अपनी सफलता से खुश होकर बीरसाय कहते हैं कि मनरेगा से भूमि सुधार और कृषि विभाग से टपक सिंचाई का लाभ मिलने से अब उनकी रोजगार की समस्या हमेशा के लिए खत्म हो गई है। अब हर सप्ताह सब्जी से अच्छी आय हो जाती है और पैसों की चिंता भी खत्म हो गई है। कुछ खेतों में वह सब्जी का उत्पादन करते हैं और बाकी खेतों में वह परंपरागत धान और गेहूं की फसल लेकर अतिरिक्त कमाई भी करने लगे हैं।

बिगड़ती कानून व्यवस्था, महिलाओं के प्रति अपराधों के विरोध में कांग्रेस ने सभी जिलों में मौन धरना दिया-कांग्रेस

रायपुर(समय दर्शन)। प्रदेश की बिगड़ती कानून व्यवस्था और महिलाओं के साथ बढ़ते अपराध तथा रोज-रोज हो रही बलात्कार की घटनाओं को लेकर कांग्रेस ने प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों में मौन धरना विरोध प्रदर्शन किया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज बिलासपुर में तथा नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत रायपुर, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल धरसीवा के प्रदर्शन में शामिल हुये। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि साय सरकार के राज में महिलाओं के प्रति अपराधों में बेतहाशा बढ़ोतरी हो गयी है। मासूम बच्चियों के साथ घृणित दुराचार की घटनाये बढ़ गयी। रोज समाचारों में प्रदेश भर में तीन से चार मासूम अबोध बच्चियों के साथ तथा सामूहिक दुराचार की घटनाओं की खबरे सामने आ रही। 9 माह में प्रदेश में 600 से अधिक हत्याओं की घटना हो गयी है। साय सरकार के 9 माह में छत्तीसगढ़ बदहाल हो गया। कानून व्यवस्था की स्थिति खराब हो गयी। एसपी, कलेक्टर कार्यालय जला दिया गया। हत्याओं का नया रिकॉर्ड बन गया। गौ तस्करी की घटनाएं शुरू हो गयी। महिलाओं के प्रति अपराधों में बढ़ोतरी हो गयी, पोटाकेबिन में बच्ची की जलकर मौत, अबोध बच्ची मां बनी, नारायणपुर में मासूम बच्चियों से स्कूल में छेड़खानी। बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, लूट, अपराध, डकैती, चाकूबाजी की घटनायें बढ़ गयी।

धार्मिक, आध्यात्म और जन आस्था का केन्द्र है बखारीपाठ: विजय शर्मा

बखारी पाठ में मंच निर्माण, पहुंच मार्ग और पुलिया निर्माण की घोषणा

रायपुर(समय दर्शन)। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा कवर्धा प्रवास के दौरान धार्मिक, आध्यात्म और जन आस्था का केन्द्र ग्राम बखारीपाठ में आयोजित रामधुनी कार्यक्रम में शामिल हुए। उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि, खुशहाली और प्रगति के लिए आशीर्वाद मांगा। इस मौके पर श्री शर्मा ने बखारी पाठ के विकास के लिए पहुंच मार्ग में पुलिया निर्माण और मंच निर्माण कराने के लिए राशि स्वीकृत करने की घोषणा की। उन्होने राम मंडली में आए पांच मंडली को 21-21 सौ रूपए देने की घोषणा की। उन्होने मेला समिति की अन्य मांगों पर भी सैद्धांतिक सहमति देते हुए सभी मांगों को प्राथमिकता में रखते हुए पूरा करने का भरोसा भी दिलाया। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि ग्राम बखारीपाठ प्राचीन काल से धार्मिक, आध्यात्म और जन-आस्था का केन्द्र रहा है। यहां क्षेत्रवासी प्राचीन समय से पूजा-अर्चना करते आ रहे हैं। यह क्षेत्र धार्मिक पर्यटन स्थल के लिए प्रसिद्ध है। आयोजन समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि यहां के आसपास के क्षेत्रों से लोग बखारीपाठ में पूजा अर्चना करने आते है और धार्मिक जनआस्था का केन्द्र है। इस क्षेत्र के विकास होने से यहां के क्षेत्रवासियों का विकास होगा। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा अंचल के गांवों के विकास के लिए लगातार कार्य किए जा रहे है। गांव के विकास होने से शहर तक पहुंच का मार्ग बनेगा। इस अवसर पर बखारी पाठ मेला समिति के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधिगण सहित आसपास के ग्रामीणजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

डूमरतराई में जमकर प्रदर्शन सड़ी गली सब्जियां फेंकने से मोहल्ले वाले परेशान

रायपुर(समय दर्शन)। श्रीराम थोक सब्जी मंडी डूमरतराई के बाहर स्थानीय रहवासी प्रदर्शन पर उतर आए। पुरूषों के साथ महिलाएं और छोटे बच्चे भी शामिल हुए। ये सभी प्रशासन विरोध में नारे बाजी करते रहे। वर्धमान नगर के रहवासी कॉलोनी के रास्ते पर अवैध पार्किंग, अवैध कब्ज़ा और सड़क किनारे सड़ी गली सब्जियां फेकने से हो रही गंदगी से परेशान हैं। हाथों में पोस्टर लिए ये लोग नगर निगम के विरोध में नारे लगा रहे । इनका कहना है कि सुबह 4 बजे से दोपहर 12-1बजे तक सब्जियों से भरे ट्रक, मेटाडोर, छोटा हाथी, आटो वर्धमान नगर से लेकर हिमालयीन हाइट्स तक अवैध रूप से पार्क किए जाते हैं । और सड़ी गली सब्जियों फेंके जाने से उनकी बदबू किसी ट्रेचिंग ग्राउंड से अधिक बदबू आती है। इससे इलाके के लोगों को आवाजाही में दिक्कत होती है। इनके ड्राइवर कंडक्टर वहीं अवैध रूप से शराब,गांजा आदि पीकर प्रदूषण फैलाते है। और आपसी मारपीट कर अशांति फैलाते है। इससे लोगों खासकर महिलाओं की सुरक्षा पर हमेशा खतरा डर बना रहता है। रहवासियों ने कलेक्टर के नाम पत्र भी लिखा है।

विजयवाड़ा के बाढ़ग्रस्त इलाकों में खाद्य सामग्री और पानी की बोतलें बांटते हुए मंत्री अचेनयडू जेसीबी पर नजर आए.

देर रात तक बड़े होटलों में पार्टी, पुलिस ने किया एक्शन तेज़

रायपुर(समय दर्शन)। राजधानी में एसएसपी के निर्देश पर होटलों और रेस्टोरेंट्स की चेकिंग की जा रही है। देर रात खुले रहने वाले रेस्टोरेंट और होटलों पर सख्ती बरती जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार राजधानी के विधानसभा थाना इलाके की पुलिस ने क्षेत्र की होटलों की जांच की। पुलिस को इस क्षेत्र की होटलों में देर रात तक खुले होने और अवैध और चोरी-छिपे तरीके से ग्राहकों को शराब पिलाने की सूचना मिल रही थी। इस पर ऐक्शन लेते हुए पुलिस ने कार्रवाई की। प्रतिष्ठानों के मैनेजर और कर्मचारियों पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की बता दें कि राजधानी में बढ़ते क्राइम के बीच बीती देर रात अचानक एसएसपी गश्त पर निकले थे। इस दौरान उन्होंने शहर के कई प्रमुख थानों का निरीक्षण किया था। एसएसपी ने थाना माना, गंज, क्राइम ऑफिस और सिविल लाइन थानों का दौरा कर नाइट पेट्रोलिंग, पंडरी बस स्टैंड और अन्य चेक पॉइंट्स का जायजा लिया था। विशेष टीम ने समय से अधिक देर तक खुले रहने वाले बार और रेस्टोरेंट्स को चेक किया और कई होटल और रेस्टोरेंट्स, जिनमें फ्लोरेंस, शीतल जूक, देशी ठाट, एफ्टीबी, और स्काई लाउंज शामिल हैं। इस सभी के मैनेजर और अन्य को अवैधानिक गतिविधियों में पाए जाने पर थाने लाकर उनके खिलाफ आबकारी एक्ट और अन्य प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की गई थी।

निगम नेता प्रतिपक्ष ने महापौर की मॉस्को यात्रा पर उठाया सवाल, लगाए ये आरोप

रायपुर(समय दर्शन)। मास्को से लौटने के बाद, महापौर एजाज ढेबर ने अपनी यात्रा के दौरान किए गए एम.ओ.यू. (मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग) की जानकारी साझा की। उन्होंने अपनी यात्रा को निजी नहीं बल्कि आधिकारिक बताया और कहा कि रूस सरकार द्वारा वीजा और टिकट की व्यवस्था की गई थी। हालांकि, भाजपा नेता मीनल चौबे ने इन दावों पर सवाल उठाते हुए गंभीर आरोप लगाए हैं। मीनल चौबे के अनुसार, महापौर ढेबर ने मास्को जाने के लिए निगम प्रशासन से 10 लाख रुपये की स्वीकृति मांगी थी। उन्होंने बताया कि महापौर ने 2 जुलाई 2024 को एक पत्र निगम सचिवालय को प्रेषित किया था, जिसमें मास्को में आयोजित होने वाले सम्मिट कार्यक्रम में भाग लेने के लिए 10 लाख रुपये की अनुमानित व्यय राशि स्वीकृत कराने का आग्रह किया गया था। इस पत्र के साथ यात्रा में होने वाले खर्चे, जैसे फ्लाइट फेयर, भोजन, और फाइव स्टार होटल में ठहरने का विवरण भी शामिल था। उन्होंने आगे कहा कि महापौर द्वारा जिस एम.ओ.यू. का उल्लेख किया जा रहा है, उसमें लाईट मेट्रो ट्रेन का कोई जिक्र नहीं है। यह वास्तव में एक संयुक्त वक्तव्य है जिसे महापौर एम.ओ.यू. बता रहे हैं। उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि महापौर के बयान में लाईट मेट्रो ट्रेन की अनुमति के बारे में जो कहा गया है, वह हास्यास्पद है, क्योंकि बिना राज्य सरकार की अनुमति के कोई भी तकनीकी टीम शहर में काम नहीं कर सकती है। मीनल चौबे ने महापौर एजाज ढेबर को एक सतही नेता बताते हुए कहा कि उन्हें अपने बयानों में गंभीरता बरतनी चाहिए, खासकर जब वे शहर के प्रतिनिधित्व की बात कर रहे हों। उन्होंने महापौर द्वारा विदेशी प्रतिनिधियों के रायपुर दौरे की संभावना पर भी सवाल उठाया और पूछा कि यह निमंत्रण व्यक्तिगत है या नगर निगम का आधिकारिक निमंत्रण। नेता प्रतिपक्ष ने महापौर के एम.ओ.यू. को रायपुर की जनता के साथ एक भद्दा मजाक बताया और महापौर को अधिक गंभीरता से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने की सलाह दी।

कलेक्टर ने वेटलिफ्टिंग में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों का किया सम्मान

रायपुर(समय दर्शन)। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने वेटलिफ्टिंग में गोल्ड, सिल्वर और ब्रान्ज पदक जीतने पर खिलाड़ियों का सम्मान किया। कलेक्टर ने खिलाड़ियों को पदक देकर उन्हें उज्जल भविष्य की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर नगर निगम आयुक्त अबिनाश मिश्रा, जिला पंचायत सीईओ विश्वदीप उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ प्रदेश वेटलिफ्टिंग एसोसिएशन द्वारा 22 वीं राज्य स्तरीय सब जूनियर एवं जूनियर वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन भिलाई में 24 से 26 अगस्त के मध्य किया गया। इसमें खेलो इंडिया लघु केंद्र वेटलिफ्टिंग सेंटर के खिलाड़ियों ने भी भाग लिया। खेलों इंडिया लघु केंद्र के 18 बच्चे ने प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें एक गोल्ड, एक सिल्वर और 6 ब्रॉन्ज मेडल समेत 8 मेडल हासिल किए। इस प्रतियोगिता में करण कुमार ने गोल्ड मेडल, चैतन्य बागडे ने ब्रॉन्ज मेडल, साहित गेंद्रे ने ब्रॉन्ज मेडल, वेदांत ने ब्रॉन्ज मेडल, महिमा ने ब्रॉन्ज मेडल, मेघा घृतलहरे ने सिलल्वर मेडल सब जूनियर और जूनियर वर्ग में कांस्य पदक और सीनियर वर्ग में कांस्य पदक प्राप्त किया।

संपादकीय

पॉक्सो के असर पर बहस

बदलापुर की घटना ने पोक्सो के असर पर बहस छेड़ दी है। बच्चों को यौन अपराधों से बचाने के लिए ये कानून 2012 में बना था। लेकिन साफ है कि इस कानून पर उचित अमल सुनिश्चित करने में हमारी व्यवस्था नाकाम रही है। बॉम्बे हाई कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद बदलापुर कांड को लेकर आयोजित विपक्ष का महाराष्ट्र बंद टल गया, लेकिन इस घटना को लेकर राज्य में फैले आक्रोश पर विराम नहीं लगा है। इस घटना से जाहिर हुआ कि स्कूलों में बच्चियों की सुरक्षा आज भी कितनी लचर है। यह टिप्पणी खुद अदालत ने की है कि स्कूलों में बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती, तो फिर शिक्षा के अधिकार का क्या मतलब रह जाता है। महाराष्ट्र में ठाणे के बदलापुर में स्थित एक स्कूल में प्री-प्राइमरी क्लास में पढ़ने वाली चार साल की दो बच्चियों के यौन उत्पीड़न होने की खबर आई। बताया जाता है कि ये घटना स्कूल के टॉयलेट में 12 और 13 अगस्त को हुई। यौन उत्पीड़न का आरोप स्कूल में काम करने वाले क्लीनर अक्षय शिंदे पर लगा। पीड़ित परिवार का आरोप है कि पुलिस ने कार्रवाई करने में देरी की। पुलिस ने 16 अगस्त को जाकर एफआईआर दर्ज की। उसके बाद आरोपी को गिरफ्तार किया गया। ये खबर फैलते ही बदलापुर में जन आक्रोश भड़क उठा। हजारों लोगों की भीड़ ने इंसाफ की मांग करते हुए वहां के रेलवे ट्रैक को जाम कर दिया, जिस वजह से घंटों तक ट्रेन सेवाएं बाधित रहीं। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हटाने के लिए लाठीचार्ज किया और कुछ लोग गिरफ्तार किए गए, जिन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। इस घटना ने प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फॉम सेक्सुअल ऑफेन्स एक्ट (पॉक्सो) के असर पर बहस छेड़ दी है। नाबालिग बच्चों को यौन अपराधों से सुरक्षित रखने के लिए ये कानून 2012 में बनाया गया था। लेकिन साफ है कि इस कानून पर उचित अमल सुनिश्चित करने में हमारी व्यवस्था नाकाम रही है। पॉक्सो बहुत कठोर कानून है, लेकिन ट्रेनिंग और जागरूकता के लिहाज से जो होना चाहिए, वह नहीं हो पाया रहा है। हर ऐसी वीभत्स घटना के बाद अधिक सख्त कानून की मांग उठती रही है। 2012 के बाद ऐसे कई कानून बनाए गए। लेकिन उन कानूनों पर अमल सुनिश्चित ना हो, तो उनकी उपयोगिता क्या रह जाएगी? बदलापुर की घटना ने फिर ये सवाल हमारे सामने ला खड़ा किया है।

ममता भाजपा की आँख की किरकिरी

ओमप्रकाश मेहता

केन्द्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार के अश्वमेद्य यज्ञ का घोड़ा रोकने वाली पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी भाजपा की आँख की किरकिरी बनी हुई है, भारतीय जनता पार्टी का सपना पूरे देश के सभी राज्यों पर 'एकछत्र' राज स्थापित करना है, किंतु पश्चिम बंगाल और तेलंगाना जैसे राज्य बाधक बने हुए है, अब पश्चिम बंगाल के मौजूदा हालातों को देखते हुए लगता है कि भाजपा ने आर-पार की लड़ाई शुरू करने की ठान ली है और भाजपा विरोधी नेताओं से हर तरीके से निपटने की ठान ली है, इसी का ट्रेलर मौजूदा पश्चिम बंगाल में दिखाई दे रहा है, इसलिए भाजपा ने भी तय कर लिया है कि वे हर कानूनी गैर-कानूनी कदम उठाकर अपनी मनोकामना पूरी करेगें, इसके लिए उन्हें कुछ भी क्यों न करना पड़े? इसलिए यह संभावना व्यक्त की जा रही है कि पश्चिम बंगाल में भाजपा अपनी कौशिशों में कामयाब नही होती है तो वहां राज्यस्तरीय अशांति के नाम पर सरकार को भंग कर राष्ट्रपति शासन लगाया जा सकता है, जिसकी सिफारिश वहां के राज्यपाल केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह से मिलकर पहले ही कर चुके है। अब यहां मुख्य सवाल यह पैदा होता है कि पश्चिम बंगाल में जिस घटना को लेकर राजनीतिक उठापटक की जा रही है, वैसी घटनाएं तो भाजपा शासित उत्तरप्रदेश जैसे राज्यों में कई घट चुकी है, फिर वहां पश्चिम बंगाल की मौजूदा तर्ज पर आंदोलन क्यों नही हुए, भाजपा शासित उत्तरप्रदेश तो अपराधों का सबसे बड़ा केन्द्र माना जाता रहा है, जहां के मुख्यमंत्री अब शांति का दावा कर रहे है, तो क्या वास्तव में उत्तरप्रदेश ''अपराध शून्य प्रदेश'' हो गया है, जबकि वहां के लोगों का यह कहना है कि वहां ऐसे अपराधों में कोई कमी नही आई है, उन्हें सार्वजनिक रूप देने पर सक्षम रोक लगाई गई है। अब जहां तक पश्चिम बंगाल का सवाल है, वहां पिछले दो-तीन दिन से जो कुछ हो रहा है, उसके पीछे केवल और केवल भाजपा का ही हाथ बताया जा रहा है, वहां के छात्रों को इस विध्वंसक राजनीति का मोहरा बनायया गया है और इस सबका एकमात्र राजनीतिक उद्देश्य पश्चिम बंगाल को 'अशांत राज्य' बताकर वहां की सरकार को भंग कर वहां राष्ट्रपति शासन कायम करना है, अब तक का यह इतिहास रहा है कि केन्द्र में जिस दल की भी सरकार होती है, वह विरोधी पार्टी की राज्य सरकारों को इसी तरह गिरती आई है और राष्ट्रपति शासन कायम करती आई है, आज विपक्ष में विराजित कांग्रेस ने भी केन्द्र में सरकार रहते, विरोधी दलों की राज्य सरकारों पर अनेक बार यही सलूक किया है, इसलिए आज केन्द्र में विराजित सरकार पश्चिम बंगाल को लेकर जो सोच रही है, वह भारतीय राजनीति में कोई नया नही है। पश्चिम बंगाल के बारे में कोठ सख्त कानूनी कदम उठाने के पहले भारतीय जनता पार्टी इस पहलू पर भी गंभीर चिंतन कर रही है कि केन्द्र के इस कदम का अगले एक दो महीनों में होने वाले कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों पर क्या असर पड़ेगा, इसी मसले पर अभी भाजपा में गंभीर चिंतन जारी है, जिसकी बागडोर गृहमंत्री अमित शाह संभाल रहे है। इस प्रकार कुल मिलाकर मौजूदा समय इसलिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है कि क्योंकि भारत के राजनीतिक दल अपनी भावी योजनाओं के गंभीर चिंतन में वयस्त है तथा मुख्यत: भाजपा पूरे देश पर 'एकछत्र राज' स्थपित करने के मंसूबों में व्यस्त है, अब ऐसे में देश में विकास व जनहित की योजनाओं पर मंथन शून्य हो गया है।

न्यायपालिका को अपराधी नहीं, पीड़ित के पक्ष में खड़ा होते दिखना चाहिए

संजय सक्सेना

यह बात समझ से परे है कि जो लोग जघन्य अपराध करते हैं? छोटी-छोटी बच्चियों के साथ दुष्कर्म करते हैं उनके ऊपर कार्रवाई करते समय सरकार पूरी तरह से कानून का पालन करे। तर्क दिया जाता है कि अपराध कोई एक व्यक्ति करता है तो उसके पूरे परिवार को इसका खामियाजा क्यों भुगतना पड़े। ऐसे तर्क देने वालों को समझना चाहिए कि जब किसी एक बच्ची के साथ दुष्कर्म या परिवार के किसी सदस्य के साथ कोई आपराधिक वारदात होती है तो उसका खामियाजा जब पूरे परिवार को भुगतना पड़ता है तो फ्रि अपराधी को इस आधार पर कैसे छूट दी जा सकती है कि उसके किये अपराध की सजा पूरे परिवार को नहीं मिलनी चाहिए। बात सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले की हो रही है जिसमें उसने राज्य सरकारों द्वारा की जा रही बुलडोजर की कार्रवाई पर प्रश्न चिन्ह उठाया था। सुप्रीम कोर्ट का अपना पक्ष हो सकता है लेकिन सभी आपराधिक मामलों के समय यह कसौटी पर खरा नहीं उतरता है। अपराध करने वाला अगर ताकतवर हो तो वह कानून को अपने हिसाब से 'खरीद' लेता है। अपना सही-गलत बचाव करने के लिये वकीलों की पूरी फौज कोर्ट में उतार देता है। क्या यह सही नहीं है कि आज भी जेलों में छोटे मोटे अपराध करने वालों को इसलिये जमानत नहीं मिल पा रही है क्योंकि वह आर्थिक रूप से सबल नहीं हैं। उनका दर्द कोर्ट की चौखट तक पहुंच ही नहीं पाता है। सुप्रीम कोर्ट इस बात की व्याख्या कभी क्यों नहीं करता है कि एक मुकदमें में वादी-प्रतिवादी की तरफ से कितने अधिवक्ता बहस कर सकते हैं।

यह सच नहीं है कि सरकार हर एक अपराधिक मामले में बुलडोजर लेकर खड़ी हो जाती है, लेकिन माहौल ऐसा बना दिया जाता है जैसे सरकार बहुत बड़ी कसूरवार हो। खासकर योगी सरकार पर तो यह भी आरोप लगते हैं कि वह मुस्लिमों के खिलाफ ज्यादा बुलडोजर कार्रवाई करते हैं। ऐसी बातें करने वाली कानून की आड़ में अपने अपराध पर पर्दा डालने का काम करते हैं। बता दें कई राज्यों में प्रशासन द्वारा आरोपियों के घर पर बुलडोजर चलाए जाने पर 02 सितंबर को सुप्रीम कोर्ट ने सवाल किया था। कोर्ट का सवाल था कि कानून में तय प्रक्रिया का पालन किये बगैर किसी का घर कैसे ढहाया जा सकता है। सिर्फ किसी के अभियुक्त होने पर उसका घर कैसे ढहाया जा सकता है। शीर्ष अदालत ने बगैर नोटिस के आरोपियों के घर ढहाने की शिकायत पर कहा कि अगर वह दोषी भी है तो भी कानून में तय प्रक्रिया के बगैर उसका घर नहीं ढहाया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट का यह कथन समानांतर सरकरार चलाने जैसा नजर आता है। खैर,सुप्रीम कोर्ट ने इस संबंध में पूरे देश के लिए दिशा-निर्देश जारी करने का संकेत देते हुए सभी पक्षकारों से सुझाव मांगे हैं। यह कहते समय सुप्रीम कोर्ट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उस बयान पर भी गौर फ्रमा लेता तो ज्यादा अच्छा होता जिमसें पीएम ने सुप्रीम कोर्ट के एक कार्यक्रम में उससे महिलाओं से जुड़े मामले जल्द से जल्द निपटाने की उम्मीद जताई थी, जिसमें मुख्य न्यायाधीश भी मौजूद थे।

हालांकि सुनवाई के दौरान कोर्ट ने स्पष्ट किया कि वह अवैध निर्माण को संरक्षण नहीं देंगे, लेकिन जिस तरह के आदेश कोर्ट जारी करती है उससे अवैध निर्माण को बढ़ावा मिलता ही है। पूरा देश अतिक्रमण की समस्या से जूझ रहा है इस के लिये सुप्रीम कोर्ट कोर्ट ने कभी उतने सख्त कदम नहीं उठाये जितने अतिक्रमण करने वालों के पक्ष में उठाये जाते हैं। कोई रेलवे की जमीन पर अतिक्रमण करके बस्तियां बसा लेता है तो कोई नजूल की जमीन हाथिया कर बेच देता है। कोर्ट कै आदेश से लगता है कि वह एक बेगुनाह को सजा न हो इसके लिये 99 गुनाहागारों के प्रति नरम रवैया अख्तियार करने से संकोच नहीं करता है। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में गैर कानूनी ढंग से निर्माण ढहाए जाने के आरोपों का खंडन करते हुए कहा कि कानून की तय प्रक्रिया के तहत ही कार्रवाई की जाती है। किसी अपराध में आरोपित होना कभी भी अचल संपत्ति के ध्वस्तीकरण का आधार नहीं हो सकता। मामले में 17 सितंबर को फ्रि सुनवाई होगी।

बता दे बुलडोजर कार्रवाई के खिलाफ ये टिप्पणियां और निर्देश न्यायमूर्ति बीआर गवई और केवी विश्वनाथन की पीठ ने जमीयत उलमा ए हिंद व अन्य की ओर से दाखिल याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान दिए था। जमीयत ने याचिका में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों में गैर कानूनी ढंग से आरोपियों के घर पर बुल्डोजर चलाए जाने के आरोप लगाए हैं। याचिका में कहा है कि विभिन्न राज्यों में बुल्डोजर इंसाफ का खतरनाक चलन बढ़ा है। इसमें समुदाय विशेष को और वंचित वर्ग को निशाना बनाया जा रहा है। जमीयत की ओर से वरिष्ठ वकील दुष्यंत दवे और फ्रारुख रशीद पेश हुए, जबकि उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने बहस की। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पीठ को बताया कि प्रदेश सरकार ने इस मामले में गत नौ अगस्त को ही हलफ्नामा दाखिल कर दिया था और उस हलफ्नामे में राज्य सरकार ने कहा है कि अगर कोई व्यक्ति किसी अपराध में आरोपी है तो उसका घर ढहाए जाने का यह आधार कतई नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि कोई भी अचल संपत्ति सिर्फ इस आधार पर नहीं ढहाई जा सकती कि व्यक्ति किसी अपराध में आरोपी है। मेहता ने कहा कि अचल संपत्ति म्युनिसिपल अधिनियम और विकास प्राधिकरणों के अधिनियम के उल्लंघन पर कानूनी प्रक्रिया का पालन करते हुए ही ढहाई जाती है। पीठ ने मेहता से कहा कि अगर आप ये स्थिति स्वीकार कर रहे हैं तो अच्छी बात है। कोर्ट आपका बयान दर्ज करके पूरे देश के लिए दिशा-निर्देश जारी करेगा। मेहता ने कहा कि याचिकाकर्ता इस तरह से मामले को पेश कर रहे हैं, जैसे कि कोई किसी अपराध में आरोपी होता है तो उसका मकान ढहा दिया जाता है, जबकि यह सही नहीं है। वह दिखा सकते हैं। अथॉरिटीज ने मकान ढहाए जाने से बहुत पहले नोटिस जारी किया था। निर्माण अवैध होने पर ही ढहाया जाता है।

पीठ ने भी स्पष्ट किया कि वह किसी अवैध निर्माण या सड़क पर अतिक्रमण को संरक्षित नहीं करेंगे, लेकिन इस संबंध में दिशा-निर्देश होने चाहिए। जस्टिस गवई ने कहा कि किसी का घर सिर्फ इसलिए कैसे गिराया जा सकता है कि वह आरोपी है। अगर वह दोषी भी है तो भी उसका घर नहीं गिराया जा सकता। जस्टिस विश्वनाथन ने कहा कि अवैध निर्माण पर भी कानून के मुताबिक ही कार्रवाई हो सकती है। मेहता ने कहा कि इस मामले में जिनके घर ढहे हैं, उनकी जगह यहां याचिका जमीयत ने दाखिल की है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार का हलफ्नामा देखते हुए कोर्ट को यह मामला बंद कर देना चाहिए, लेकिन याचिकाकर्ता जमीयत की ओर से पेश वकील दुष्यंत दवे ने कोर्ट से इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी करने का आग्रह किया। दुष्यंत दवे ने कहा कि यह मामला सिर्फएक जगह का नहीं है, यह व्यापक मुद्दा है और कोर्ट को इस पर सुनवाई करके दिशा-निर्देश तय करने चाहिए। जस्टिस विश्वनाथन ने कहा कि यह सुनिश्चत करना जरूरी है कि कोई भी कमियों का फ्यदा न उठा पाए। निर्माण अवैध है तो भी कानून के मुताबिक कार्रवाई होनी चाहिए। एक पिता का बेटा अड़ियल हो सकता है, लेकिन इस आधार पर किसी का घर गिरा दिया जाए तो यह तरीका सही नहीं है। कुछ याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ वकील सीयू सिंह ने भी बहस की। दवे और सिंह ने कहा कि यहां कुछ मामले ऐसे हैं, जिसमें किराएदार के आरोपी होने पर बुल्डोजर कार्रवाई हुई है। कोर्ट ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद कहा कि सभी लोग अपने अपने सुझाव दाखिल करें, ताकि कोर्ट इस संबंध में पूरे देश के लिए उचित दिशा-निर्देश तय कर सके। अब अगली सुनवाई 17 सितंबर को होगी। कुल मिलाकर सुप्रीम कोर्ट अपराधियों के खिलाफकैसे कार्रवाई हो इस पर तो चिंतित दिखा लेकिन पूरी सुनवाई के दौरान उसने ऐसा कुछ नहीं कहा जिससे इस बात का अहसास होता कि कोर्ट की संवेदनाए पीड़ित पक्ष के साथ भी जुड़ी हुई हैं, जो चिंताजनक है। एक तरफ जब किसी सरकार में अपराध बढ़ते हैं तो तमाम कोर्ट उसको कटघरे में खड़ा करता है, लेकिन जब अपराध नियंत्रण के लिये कोई कार्रवाई की जाती है तो वह सरकार को ही कार्रवाई पर उंगली उठाती है।

ममता का बंगाल और बेखौफअपराधी

कोलकाता के आरजी कर राजकीय अस्पताल में एक डाक्टर के साथ बलात्कार के बाद उसकी अमानुषिक ढंग से हत्या कर दी गई। ऐसा जघन्य कार्य किसी भी प्रदेश में हो सकता है और इससे पहले हुआ भी होगा। लेकिन अन्य स्थानों पर हुए इस प्रकार के जघन्य अपराध और कोलकाता में हुए इस जघन्य अपराध के बीच एक बहुत बड़ा अंतर है। वह अंतर यह है कि ममता बनर्जी की पश्चिम बंगाल सरकार हर हालत में अपराधियों के साथ और उनको किसी भी तरह बचाने का प्रयास कर रही है। सरकार का काम अपराधियों को दंड देना और नागरिकों के जान और माल की रक्षा करना है। लेकिन पश्चिम बंगाल में सरकार अपराधियों के जान-माल की सुरक्षा के लिए तत्पर और महिला डाक्टर की जघन्य हत्या को आत्महत्या कह कर कूड़ेदान में डाल देने की कोशिश कर रही है। इतना ही नहीं, जब हत्या का हल्ला पडने लगा तो बंगाल सरकार को सबसे पहली यह चिंता हुई कि किसी तरह से घटना के स्थान से बलात्कार और हत्या के सबूतों को खत्म कर दिया जाए। सरकार इसके लिए बाकायदा किसी पुलिस वाले की ड्यूटी को लगा नहीं सकती थी। इस काम के लिए आनन फ्रनन में लगभग सात हजार लोगों की भीड़ एकत्रित की गई जिसने अस्पताल पर धावा बोल दिया। पुलिस मूकदर्शक बन कर तमाशा देखती रही। नाटक को विश्वसनीय बनाने के लिए इक्का दुक्का पुलिस के सिपाहियों पर भी हमला कर दिया गया ताकि नाटक में यह भाव आए कि पुलिस उपद्रवियों की भीड़ को रोकती रही, लेकिन स्थिति उसके नियंत्रण से बाहर हो गई। इस तथाकथित नियंत्रण से बाहर हुई भीड़ ने उस सेमिनार हाल पर हमला कर दिया जहां उस अभागी डाक्टर की बलात्कार के बाद हत्या कर दी गई थी। मेडिकल संस्थान ने तो उससे भी ज्यादा फुर्ती दिखाई। उसने उस सेमिनार हाल के कुछ हिस्से को गिरवाकर, उस हाल का नवनिर्माण अभियान चला दिया। लेकिन अब तक संस्थान के डाक्टर अपनी एक सहयोगी डाक्टर की इस अमानवीय हत्या के खिलाफ सडकों पर निकल चुके थे। अब तक कालेज के निदेशक डा. संदीप घोष पर चारों ओर से शक की सूईयां घूमने लगी थीं। भ्रष्टाचार से लेकर अस्पताल में लावारिस लाशों की बिक्री तक के चर्चे मीडिया में आने शुरू हो गए। यह सबको पहले से ही पता था कि घोष बाबू तृणमूल कांग्रेस में भी सक्रिय रहते ही हैं। लेकिन वही घोष बाबू अब तृणमूल कांग्रेस की सक्रियता के साथ साथ घटनास्थल सेमिनार हाल के कुछ हिस्से को तोडने के काम में भी सक्रिय हो रहे थे। तृणमूल और घोष बाबू दोनों समझ गए थे कि हालात जिस मोड़ पर पहुंच गए हैं, वहां उनका इस अस्पताल में रहना मुमकिन नहीं रहा। लेकिन ममता की ममता की दाद देनी होगी कि उन्होंने उसे तुरंत दूसरे मेडिकल कालेज का प्रिंसिपल बना दिया। एक रहस्य अभी तक नहीं सुलझ पाया कि आनन फ्रनन में बलात्कार स्थल पर हजारों लोगों की भीड़ किसने और कैसे इकट्ठी की। इतना तो निश्चित है कि बलात्कार और हत्या का दोषी संजय राय अपने बलबूते इतने कम समय इतनी आक्रामक भीड़ इकट्ठी नहीं कर सकता था। यकीनन इस भीड़ को बुलाने वाला गैंग कोई और था। लेकिन यह गैंग अपराध के सभी सबूत खतरा लेकर भी क्यों मिटाना चाहता था? इस गैंग का संजय राय से क्या संबंध है? पुलिस ने किसके आदेश पर गैंग को बेखौफहोकर काम करने दिया? यहां तक कि पुलिस पिटती रही लेकिन उसने प्रतिकार नहीं किया। पुलिस को यह आदेश प्रिंसिपल संदीप घोष तो नहीं दे सकता था। इतनी बड़ी उसकी औकात नहीं थी।

जाँच एजेंसियों पर दुरुपयोग का आरोप

रजनीश कपूर

मोदी राज में यह चमत्कार हो रहा है कि सत्ता पक्ष से जुड़े लोगों पर तो प्राथमिक कार्यवाही भी नहीं होती किंतु विपक्ष के नेताओं पर हवा की गति से कार्यवाही होती है। कई मामलों में तो केवल गवाह के बयान पर ही मुख्य मंत्री और बड़े-बड़े नेताओं को सीखचों के पीछे महीनों और सालों के लिए डाल दिया जाता है। यह आश्चर्यजनक है। हाल ही में सरकार की इस प्रवृत्ति पर कुछ रोक लगती नज़र आई है। सन् 2014 से नरेंद्र मोदी ने जब देश के प्रधानमंत्री बनने की तैयारी में अपना प्रचार अभियान शुरू किया था तो भ्रष्टाचार के विरुद्ध उनका आह्वान था, फ्रन खाऊँगा और न खाने दूँगाफ्र। उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद इसका असर भी फ़ौरन दिखाई दिया। केंद्र सरकार की नौकरशाही में यह संदेश गया तो ऐसा लगा जैसे अब जल्दी ही लाल फ़ीताशाही ख़त्म होगी। पर जैसे-जैसे समय बीतता गया, ये शुरुआती लक्षण ठंडे पड़ते गये। हालाँकि मोदी जी दो बार अपने बूते पर और तीसरी बार अन्य दलों की मदद लेकर सरकार की तीसरी पारी खेल रहे हैं।

पर इन वर्षों में जिस बात ने सभी को चौंकाया है वो यह है कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध मोदीजी का यह अभियान केवल विपक्षी दलों तक ही सिमट कर रह गया है। उनमें से भी भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे जिस विपक्षी दल के नेता मोदी जी और अमित शाह के शरणागत हो जाते हैं उनके सौ खून भी माफ़ कर दिये जाते हैं। इतना ही नहीं उन्हें संसद या मंत्री बना कर पुरुस्कृत भी किया जाता है। और इसके चलते मोदी सरकार की घर-घर बदनामी है। न सरकार की साख बची है और न जांच एंजेसियों की।

मोदी-शाह की इस रणनीति के हथियार बने हैं केंद्रीय जाँच एजेंसियाँ, जो लगातार 'हिज़ मास्टर्स वॉइस' की तर्ज़ पर काम कर रही हैं। इसलिए लगातार विपक्ष उन पर जाँच एजेंसियों के दुरुपयोग का आरोप लगा रहा है, संसद में भी और संसद के बाहर भी। वैसे तो सीबीआई, आयकर विभाग और प्रवर्तन निदेशालय की छवि बड़े-बड़े मामलों को लम्बा खींचने या दबाए रखने की है।

पर मोदी राज में यह चमत्कार हो रहा है कि सत्ता पक्ष से जुड़े लोगों पर तो प्राथमिक कार्यवाही भी नहीं होती किंतु विपक्ष के नेताओं पर हवा की गति से कार्यवाही होती है। कई मामलों में तो केवल गवाह के बयान पर ही मुख्य मंत्री और बड़े-बड़े नेताओं को सीखचों के पीछे महीनों और सालों के लिए डाल दिया जाता है। यह आश्चर्यजनक है। हाल ही में सरकार की इस प्रवृत्ति पर कुछ रोक लगती नज़र आई है।

बीते कुछ महीनों में जिस तरह सुप्रीम कोर्ट ने भ्रष्टाचार के कई मामलों पर देश की जाँच एजेंसियों और सरकार को आड़े हाथों लिया है उससे यह संदेश गया है कि जाँच एजेंसियाँ राजनैतिक दबाव में काम कर रहीं हैं, निष्पक्षता से क़ानून के दायरे में नहीं। मान्य सिद्धांत यह है कि आरोपी चाहे किसी भी दल या विचारधारा को क्यों न हो, यदि उसने अपराध किया है तो उसकी जाँच निष्पक्षता से ही की जानी चाहिए। बेवजह किसी भी आम या ख़ास अपराधी को क़ानून की ग़लत धारा लगा कर जेल में रखना ग़लत है। उसी तरह किसी ख़ास रुतबे वाले कुख्यात अपराधी को भी क़ानून की धाराओं का ग़लत इस्तेमाल कर पैरोल दिलवाना भी ग़लत है। ज़ाहिर सी बात है कि जाँच एजेंसियों द्वारा ऐसी ग़लतियाँ बिना किसी दबाव के नहीं होती।

ताज़ा उदाहरण दिल्ली शराब नीति घोटाले का है। जिस तरह शराब नीति घोटाले को लेकर आरोपी नेता एक के बाद एक ज़मानत पर छूट रहे हैं उससे जाँच एजेंसियों की 'जाँच' को लेकर सवाल उठ रहे हैं। चुनावों से पहले और चुनावों के दौरान यह माहौल बनाया जा रहा था कि इन नेताओं का अपराध काफ़ी संगीन है, इसीलिए इन्हें ज़मानत नहीं मिल रही। परंतु लंबे समय तक कछुए की चाल चल रही इस मामले की 'जाँच' ने इन एजेंसियों की क्षमता को शक के घेरे में अवश्य खड़ा कर दिया है।

वहीं सुप्रीम कोर्ट के कड़े रुख़ और सख़्त आदेश के बाद जाँच एजेंसियों द्वारा अपनाए गए दोहरे मापदंड का भी पर्दाफ़ाश हुआ। यदि जाँच एजेंसियाँ सभी आरोपियों को एक ही पैमाने से माँपेंगी तो जनता के बीच सही संदेश जाएगा, सिसोदिया हो, केजरीवाल हो, संजय राउत हो, या अन्य कोई आम आदमी, क़ानून की नज़र में सभी एक समान हैं। पर यह भी विचारणीय है कि सुप्रीम कोर्ट ने इन वीआईपी आरोपियों के मामले में ये रुख़ पहले क्यों नहीं अपनाया?

उल्लेखनीय है कि केंद्रीय जाँच एजेंसियों पर निगरानी रखने के लिए 1997 के 'विनीत नारायण बनाम भारत सरकार' (जैन हवाला कांड केस) के फ़ैसले ने केंद्रीय सतर्कता आयोग का पुनर्गठन किया था। जाँच एजेंसियों को निष्पक्ष और राजनैतिक दबाव से मुक्त करने की दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक फ़ैसला था। ज़ाहिर सी बात है कि तमाम राजनैतिक दलों ने इसका विरोध भी किया। लेकिन उसके फ़ौरन बाद ही से जिस तरह जाँच एजेंसियों को 'पिंजरे में बंद तोता' और 'सत्तापक्ष के हथियार' के नामों से नवाज़ा गया है, यह लोकतंत्र के लिए उचित नहीं था। इसलिए यदि जाँच एजेंसियों को अपनी छवि सुधारनी है तो उन्हें भय मुक्त हो कर ही कार्य करना होगा। जाँच अधिकारी, चाहे छोटे पद पर हो या बड़े पद पर, उसे इस बात के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए कि यदि उसने किसी केस की जाँच को लेकर, किसी नेता के मन की नहीं मानी तो हद से हद उस अधिकारी का तबादला ही हो होगा। परंतु यदि वो अधिकारी केस की फाइल पर सभी क़ानूनी तथ्यों को सही से दर्ज कर देता है तो कोई भी अधिकारी उसके ख़िलाफ़ नहीं जा सकता। उम्मीद की जानी चाहिए कि देश में आज भी ऐसे ईमानदार अधिकारी होंगे जो तबादले के डर से भयभीत हुए बिना अपना काम निष्ठा से करना जानते हैं। समय की माँग है कि ऐसे अधिकारी महत्वपूर्ण केसों में सही तथ्यों को दर्ज कर केस फाइल के ज़रूरी पन्नों पर अपनी निष्पक्ष राय अवश्य दर्ज कराएँ। भविष्य में जब भी कभी केस फाइल की जाँच किसी निष्पक्ष समिति द्वारा की जाएगी तो दूध का दूध और पानी का पानी अपने आप सामने आ जाएगा। ऐसे में एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए जाँच एजेंसियों का निष्पक्ष और दबाव मुक्त होना अनिवार्य है।

कई औषधीय गुणों से भरा है अर्जुन के पेड़

आयुर्वेद में अर्जुन के पेड़ को कई औषधीय गुणों से भरा हुआ बताया गया है। अर्जुन के पेड़ की छाल भी सेहत के लिए काफी फायदेमंद होती है। इस पेड़ की छाल का पाउडर बनाकर उपयोग किया जाता है। अर्जुन की छाल से स्ट्रोक, हार्ट अटैक और हार्ट फेल जैसे हार्ट संबंधी रोगों का इलाज किया जा सकता है। अर्जुन का पेड़ भारत में हिमालय की तराई, उत्तरप्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में ज्यादा पाया जाता है।

अर्जुन के पेड़ में बीटा-सिटोस्टिरोल, इलेजिक एसिड, ट्राईहाइड्रोक्सी ट्राईटरपीन, मोनो कार्बोक्सिलिक एसिड, अर्जुनिक एसिड पाया जाता है, जिस कारण यह रोग को दूर करने के लिए काफी उपयोगी माना जाता है। अर्जुन की छाल से हृदय रोग, क्षय, पित्त, कफ, सर्दी, खांसी, अत्यधिक कोलेस्ट्रॉल और मोटापे जैसी बीमारी को दूर करने में मदद मिलती है। इसके अलावा यह महिलाओं के लिए भी काफी उपयोगी है। खूबसूरती बढ़ाने वाली क्रीम के अलावा स्त्री रोगों में भी यह बहुत काम की औषधि है।

स्तन कैंसर को रोकती है अर्जुन की छाल

कई रिसर्च में खुलासा हुआ है कि अर्जुन के पेड़ में कसुआरिनिन नाम का रासायनिक घटक पाया जाता है। इसके कारण शरीर में कैंसर की कोशिकाएं फैल नहीं पाती है। विशेषकर स्तर कैंसर कोशिकाओं के विकास को रोकने में अर्जुन की छाल बड़े काम की है। यदि गर्म दूध में अर्जुन के पेड़ की छाल को बारिक पीसकर रोज सेवन किया जाए तो स्तन कैंसर से बचा जा सकता है।

दिल के रोगियों के लिए रामबाण औषधि

अर्जुन की छाल दिल के रोगियों के लिए एक असरकारक दवा है। जिनका कोलेस्ट्रॉल बढ़ा है और थोड़ा भी पैदल चलने पर सांस फूलने लगती है, उन्हें अर्जुन की छाल की चाय अवश्य पीनी चाहिए। अर्जुन की छाल धमनियों में जमने वाले कोलेस्ट्रॉल और ट्रायग्लूसराइड को कम करती है। इससे दिल को रक्त पहुंचाने वाली धमनियां सुचारू काम करने लगती हैं। इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि कोलेस्ट्रॉल या ट्राइग्लूसराइड का ज्यादा बढ़ना दिल के लिए घातक हो जाता है। इससे कई बार हार्ट अटैक आने का भी खतरा रहता है। ऐसे मरीजों को रोज अर्जुन की छाल का इस्तेमाल किसी न किसी रूप में अवश्य करना चाहिए।

डायबिटिज के रोगी ऐसे करें अर्जुन की छाल का प्रयोग

अर्जुन की छाल एक साथ कई बीमारियों को साध सकती है। कैंसर व दिल से संबंधित बीमारियों के अलावा डायबिटीज की बीमारी को नियंत्रित करने में अर्जुन की छाल बड़े काम की औषधि है। लेकिन इसके लिए अर्जुन की छाल के साथ देसी जामुन को समान मात्रा मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लेना चाहिए। इस चूर्ण को रोज सोने से पहले गुनगुने पानी के साथ लेना डायबिटीज के मरीज के लिए फायदेमंद होता है।

रुक जाता है मोटापा बढ़ना

अर्जुन की छाल का काढ़ा पीने से मोटापे की बीमारी भी नहीं होती है क्योंकि पाचन तंत्र इसके लगातार सेवन से ठीक रहता है। यदि लगातार इसका सेवन किया जाए तो सिर्फ एक माह के इसका असर देखा जा सकता है। अर्जुन की छाल इम्यून सिस्टम को भी मजबूत करती है, जिससे सर्दी खांसी जैसी बीमारियां भी नहीं होती हैं।

मुंह के छाले होते हैं दूर

अर्जुन की छाल चूंकि पेट साफ करती है और इसकी तासीर ठंडी होती है इसलिए यदि इसका रोज सेवन किया जाए तो कभी भी मुंह में छाले नहीं होते हैं। इसके अलावा यह खून को बगैर दवा लिए प्राकृतिक रूप में पतला करने भी औषधि है। इसके सेवन से हाई ब्लड प्रेशर की समस्या भी पैदा नहीं होती है।

ब्लड प्रेशर के मरीज जमकर खाएं सिंघाड़ा कम हो जाता है सिस्टोलिक बीपी

ब्लड प्रेशर बढ़ना एक गंभीर समस्या है। इसके कारण दिल, दिमाग और किडनी डैमेज हो सकती हैं। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन बताता है कि 30 वर्ष से 79 वर्ष तक के करीब 128 करोड़ लोगों को हाइपरटेंशन (हाई बीपी) की बीमारी है, जो कि कम उम्र में मौत का कारण बन रही है।

सिंघाड़ा खाकर हाई बीपी का देसी इलाज किया जा सकता है। क्योंकि बीपी को कंट्रोल में करने में सिंघाड़ा मदद करता है। यह सुपरफूड हाई बीपी का ऊपर और नीचे वाला लेवल कम कर सकता है। ऐसा कई शोध दावा करते हैं। हाई बीपी के मरीजों को डाइट में सिंघाड़ा खाना चाहिए। सिंघाड़े को कई बीमारी के मरीज खा सकते हैं। दिल के मरीजों के साथ दर्द से परेशान और डायबिटिक पेशेंट के लिए सिंघाड़ा फायदेमंद होता है। नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन पर छपी एक रिसर्च बताती है कि सिंघाड़े में इन बीमारियों का इलाज करने वाले गुण होते हैं।

दिल की बीमारी की जड़ है हाई बीपी

दुनियाभर में सबसे ज्यादा मृत्यु दिल से जुड़ी बीमारी के कारण होती हैं। जिसकी जड़ कोलेस्ट्रॉल के साथ हाई ब्लड प्रेशर (हाइपरटेंशन) होती है। तेज सिरदर्द होना, सांस फूलना और नाक से खून आना हाई ब्लड प्रेशर के संकेत होते हैं।

सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर कम होगा

नॉर्मल बीपी कितना होना चाहिए? नॉर्मल बीपी 120/80 होना चाहिए। जिसमें ऊपर वाला लेवल सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर और नीचे वाला लेवल डायस्टोलिक ब्लड प्रेशर कहलाता है। सिंघाड़ा खाने से सिस्टोलिक और डायस्टोलिक ब्लड प्रेशर कई पॉइंट नीचे आ जाता है।

पतला बनाता है सिंघाड़ा

सिंघाड़े में पानी बहुतायत में होता है, जिस कारण इसे हाई-वॉल्यूम फूड कहा जाता है। इसे खाने से फैट नहीं बढ़ता है और आपको वजन कम करने में मेहनत कम करनी पड़ती है। वहीं, सिंघाड़े में मौजूद फाइबर डायजेस्टिव सिस्टम को मजबूत बनाकर भी पतला बनाता है।

बीपी कंट्रोल करता है पोटैशियम

सिंघाड़े के अंदर प्रचुर पोटैशियम होता है और दिल के लिए पोटैशियम फूड काफी अच्छे होते हैं। क्योंकि, यह मिनरल ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में मदद करता है। एक स्टडी में पर्याप्त पोटैशियम लेने से सिस्टोलिक बीपी 3.49 और डायस्टोलिक बीपी 1.96 कम देखा गया।

फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स का खजाना

सिंघाड़े को फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स का खजाना कहा जा सकता है। हेल्थलाइन के मुताबिक, इस टेस्टी फूड में कैलोरी की मात्रा काफी कम होती है और इसे खाने से मैंगनीज, कॉपर, प्रोटीन, राइबोफ्लेविन और विटामिन बी6 भी मिलता है।

हार्ट अटैक से मौतों के बीच हर डॉक्टर ने दी एक ही सलाह

हार्ट अटैक से मौतों का ट्रेंड दिन-ब-दिन डरावना होता जा रहा है। चलते-फिरते जान जाने वाले वीडियोज हर किसी को डरा रहे हैं। इस बीच आम लोग समाधान खोज रहे हैं तो डॉक्टर्स के बीच भी चर्चे शुरू हो गए हैं।

ज्यादातर डॉक्टर्स और हार्ट स्पेशलिस्ट सलाह दे रहे हैं कि हमें हर कीमत पर अपनी लाइफस्टाइल सुधारनी होगी। इसमें सबसे जरूरी स्टेप है फिजिकली ऐक्टिव रहना। इसके लिए भी आपको ज्यादा कुछ नहीं करना बस तेज कदमों के साथ टहलना है। डॉक्टर बैलेंस्ड डायट के साथ हफ्ते में कम से कम 5 दिन 45 मिनट ब्रिस्क वॉक करने की सलाह दे रहे हैं। यहां जानें ब्रिस्क वॉक क्या है, इसके फायदे और इसमें लोग क्या क्या गलतियां करते हैं।

डॉक्टर ने दी ब्रिस्क वॉक की सलाह

हार्ट अटैक या सडन कार्डिएक अरेस्ट की खबरें हर किसी को डरा रही हैं। ऐसे में पैनिक करने के बेहतर है समाधान पर बात की जाए। ज्यादातर हेल्थ एक्सपर्ट्स का मानना है कि लोगों की लाइफस्टाइल उनकी अचानक मौतों के लिए जिम्मेदार है। दिल को हेल्दी रखना है तो फिजिकली ऐक्टिव रहना जरूरी है। इसके लिए डॉक्टर्स ब्रिस्क वॉक की सलाह देते हैं। यह आपका वजन कंट्रोल करती है, दिल मजबूत रखती है साथ ही आपका स्ट्रेस भी कम होता है। सबसे पहले जानते हैं कि ब्रिस्क वॉक आखिर है क्या?

गिनें प्रति मिनट कदम

ब्रिस्क वॉक में नॉर्मल वॉक से थोड़ा तेज चला जाता है। आसान भाषा में समझें तो एक मिनट में आपको 100 कदम चलने होते हैं। आप साथ में स्टेप काउंटर ऐप का इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे गिनती में आसानी रहेगी। ये ऐप आपको मोबाइल में ही मिल जाएगा। ब्रिस्क वॉक के दौरान चेक करें कि आप बात कर पा रहे हैं या नहीं। अगर आपकी थोड़ी बहुत सांस टूट रही है और आराम से बात कर ले रहे हैं तो आप मॉडरेट लेकिन ब्रिस्क वॉक कर रहे हैं।

न करें ये गलतियां

लोग ब्रिस्क वॉक को नॉर्मल वॉक समझ लेते हैं। ध्यान रखेंगे कि ब्रिस्क वॉक का टारगेट हार्टरेट होता है। अगर आपकी स्पीड जरूरत से कम है तो ज्यादा फायदा नहीं होगा। वहीं अगर आपकी स्पीड बहुत ज्यादा है तो भी दिक्कत हो सकती है। ब्रिस्क वॉक के दौरान आपको फुटवेअर कम्फर्टेबल होने चाहिए। रनिंग शूज ही पहनें। वर्ना पैरों की मसल्स में प्रॉब्लम हो जाएगी।

ब्रिस्क वॉक के फायदे

ब्रिस्क वॉक के अनगिनत फायदे हैं। यह आपका एक्सट्रा वजन कम करती है। आपकी कैलोरी बर्न होती है और लीन मसल्स बढ़ती है। वॉक करने से आपका मूड ठीक रहता है। ब्रिस्क वॉक से आपके दिल की सेहत ठीक रहती है, ब्लड प्रेशर लो होता है साथ ही ब्लड शुगर भी मेनटेन रहती है।

करेला खाने से दूर होती है ये बीमारियां

करेला औषधि के रूप में इस्तेमाल करने के लिए कच्चा करेला ही ज्यादा मुफीद होता है। करेला बेल पर लगने वाली सब्जी है। इसका रंग हरा होता है। इसकी सतह पर उभरे हुए दाने होते हैं। इसके अंदर बीज होती हैं और करेला पक जाए तो बीज लाल हो जाते हैं। जब तक पकता नहीं तक तग बीज सफेद रहते हैं।

करेले का न्युट्रिशनल वैल्यू

करेले में प्रचुर मात्रा में विटामिन ए, बी और सी पाए जाते हैं। इसके अलावा कैरोटीन, लुटीन, जिंक, पोटैशियम, मैग्नीशियम और मैगजीज जैसे फ्लावोन्वाइड भी पाए जाते हैं। करेले में मौजूद खनिज और विटामिन शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाते हैं जिससे कैंसर जैसी बीमारी का मुकाबला भी किया जा सकता है। डार्क करेला में ढेरों एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन पाए जाते हैं। करेले का सेवन हम कई रूपों में कर सकते हैं। हम चाहें तो इसका जूस पी सकते हैं, सब्जी या अचार बना सकते हैं। करेला ठंडा होता है, इसलिए यह गर्मी से पैदा हुई बीमारियों के इलाज के लिए बहुत लाभकारी है। अगर आपकी पाचन शक्ति कमजोर हो तो किसी भी प्रकार करेले का नित्य सेवन करने से पाचन शक्ति मजबूत होती है।

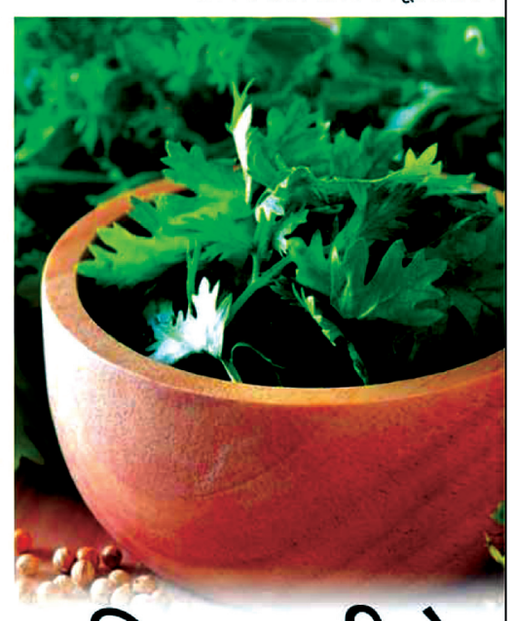

धनिया पत्ती के 10 फायदे जानकर चौंक जाएंगे आप

हरे धनिये की पत्तियों का इस्तेमाल अक्सर सब्जियों के स्वाद और सलाद के लिए किया जाता है, वहीं हरी चटनी पकौड़े के स्वाद को दोगुना कर देती है। लेकिन इसी के साथ ही धनिया पत्तियों के कई फायदे हैं जिसके बारे में शायद ही आपको पता हो। तो जानते हैं हरे धनिया पत्ती के 10 फायदों के बारे में।

- धनिये की पत्तियों में विटामिन ए और सी पाया जाता है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने का काम करते हैं।
- गर्मी हो सर्दी, इसका इस्तेमाल करना हर समय शरीर को कई तरह से लाभ पहुंचाता है।
- पाचन शक्ति को मजबूत रखना है तो इसका इस्तेमाल आपको नियमित तौर पर करना चाहिए। इससे आपकी पाचन शक्ति बढ़ती है।
- धनिये की पत्तियों के सेवन से पेट संबंधी परेशानियों में आराम मिलता है और बदहजमी, पेट में दर्द, गैस की समस्या से छुटकारा मिलता है।
- जाड़े में खाने की मात्रा अधिक होने पर दस्त की शिकायत बढ़ने लगती है। ऐसे में धनिये की चटनी व सलाद पेट को राहत पहुंचाती है।
- धनिया की पत्ती विटामिन ए और सी का मुख्य स्रोत है। ये हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधी क्षमता को मजबूत करते हैं।
- इसके नियमित सेवन से सर्दी-खांसी से छुटकारा मिलता है।
- धनिया में मौजूद तत्व शरीर से कॉलेस्ट्रॉल कम कर उसे कंट्रोल में रखते हैं। यह खून में इंसुलिन की मात्रा को नियमित करता है।
- धनिया महिलाओं में मासिक धर्म संबंधी समस्याओं को दूर करता है। अगर पीरियड्स साधारण से ज्यादा हो तो आधा लीटर पानी में लगभग 6 ग्राम धनिये के बीज डालकर उबालें। इस पानी में चीनी डालकर पीने से फायदा होगा।
- इसमें मौजूद विटामिन ए, विटामिन सी, कैल्शियम व मैग्नीशियम भरपूर मात्रा में मौजूद होता है, जो आपके स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

संक्षिप्त समाचार

शासकीय प्राथमिक शाला केसराटाल में न्योता भोज का आयोजन

सरायपाली(समय दर्शन)। शासकीय प्राथमिक शाला केसराटाल में पालक राधिका साहू जी द्वारा न्योता भोज दिया गया। जिसमें बच्चों को चावल, दाल, सब्ज़ी और जलेबी दिया गया। इस कार्यक्रम में पालक गण स्कूल के प्रधान पाठक दीपांजली सिदार, सहायक शिक्षक निरंजन मेहेर, शाला प्रबंधन समिति के सदस्य ,रसोईया एवं स्वीपर उपस्थित थे।

पुरानी पेंशन योजना के तहत पेंशन प्रकरण निराकरण हेतु कार्यशाला का हुआ आयोजन

गरियाबंद। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा पुराने पेंशन योजना को लागू करते हुए अधिकारी-कर्मचारियों को पुराने पेंशन योजना के लाभ दिए जाने हेतु विकल्प भरे जाने का प्रावधान किया गया था।जिसमें एनपीएस के अंतर्गत आने वाले कर्मचारियों द्वारा पुराने पेंशन योजना का विकल्प दिया गया था।विकल्प के आधार पर पुराने पेंशन योजना के लाभ दिए जाने हेतु छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नियम निर्देश जारी किया गया है।इसी के तहत पुरानी पेंशन योजना लागू होने पर लंबित पेंशन प्रकरणों की समीक्षा के लिए आज ऑनलाईन माध्यम से कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जिले के समस्त आहरण एवं संवितरण अधिकारियों को पीपीटी के माध्यम से प्रकरणों के निराकरण से अवगत कराया गया। प्रत्येक बिंदु पर चर्चा की गई तथा इससे संबंधित समस्याओं के बारे में भी पूछा गया।साथ ही सभी डीडीओ को पुरानी पेंशन योजना के तहत पेंशन प्रकरणों का त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिये गये। कोषालय अधिकारी पी.सी.खल्को ने बताया कि संचालक के निर्देश के परिपालन में कार्यशाला प्रत्येक जिला में आयोजित की जा रही है तथा समस्त डीडीओ से भी आग्रह किया जा रहा है कि पुरानी पेंशन योजना के तहत मिलने वाले पेंशन का लाभ अभिदाता को या उनके नॉमिनी को अविलंब प्राप्त हो जाए।शासन की मंशानुरूप सभी को तत्परता से कार्य करने हेतु निर्देशित किया गया है।वर्तमान में गरियाबंद जिला में लंबित प्रकरण के निराकरण हेतु डीडीओ वॉइस सूची उपलब्ध कराई गई , जिसे तेजी से समस्त प्रकरणों की निराकरण हेतु निर्देशित किया गया।

प्री डायबिटीज को नियंत्रित करने के लिए पौष्टिकता से जुड़ी गाइड

रायपुर। डॉ. रोहिणी पाटिल, एमबीबीएस एवं आहार विशेषज्ञ ने बताया द लैंसेट में डायबिटीज एंड एंडोक्राइनोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार भारत में 13.6 करोड़ या आबादी का 15.3प्रतिशत हिस्सा प्री-डायबिटीज के साथ जी रहा है। 2017 से लेकर अब तक इसमें काफी ज्यादा वृद्धि हुई है, जब आबादी का लगभग 6-15प्रतिशत प्रीडायबिटिक था। भारत में प्री-डायबिटीज के बढ़ते मामलों के साथ, अपनी सेहत का ख्याल रखने के लिए सक्रिय कदम उठाना बेहद जरूरी है। स्वच्छ, समझदारी भरा भोजन, ब्लड शुगर के स्तर को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है और ये प्री-डायबिटीज को पलट भी सकता है। ब्लड शुगर डायबिटीज में बदले, इससे पहले ही इसे नियंत्रित करने के लिए डॉ. रोहिणी पाटिल, एमबीबीएस और आहार विशेषज्ञ ने अपने भोजन में कुछ जरूरी खाद्य पदार्थों को शामिल करना महत्वपूर्ण बताया है। प्री-डायबिटीज आहार में शामिल होने वाले खाद्य पदार्थ: बादाम में भरपूर मात्रा में प्रोटीन, सेहतमंद फैट्स और फाइबर होते हैं, ये सभी ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। पिछले वर्ष डॉ. अनूप मिश्रा और डॉ. सीमा गुलाटी के प्रकाशित दो नए अध्ययनों में बताया गया कि अपने आहार में केवल बादाम को शामिल कर लेने से डायबिटीज का बोझ कम करने में मदद मिल सकती है। इतना ही नहीं अध्ययन किए गए लोगों में लगभग एक तिहाई लोगों में तीन महीने तक ब्रेकफास्ट, लंच और डिनर से पहले बादाम लेने से प्रीडायबिटीज सामान्य ब्लड शुगर में तब्दील हो गया। डायबिटीज शोधकर्ताओं ने प्री-डायबिटीज से सामान्य ब्लड ग्लूकोज में आने को द होली ग्रेल ऑफ मेडिसिन कहा है। इसलिए, डॉ. पाटिल अपने ब्लड शुगर को स्थिर करने और ओवरईटिंग कम करने के लिए हर रोज मुट्ठीभर बादाम खाने की सलाह देती हैं, चाहे आप इसे स्नैक के रूप में लें या सलाद और दही में मिलाकर खायें।

जिले को पूर्ण साक्षर बनाने में स्वयं सेवी आगे आएं - विधायक सिन्हा

उल्लास कार्यक्रम के स्वयंसेवी शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का विधायक ने किया शुभारम्भ

महासमुंद/समय दर्शन। उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम अंतर्गत कुशल प्रशिक्षकों का दो दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण के शुभारम्भ समारोह में विधायक महासमुंद श्री योगेश्वर राजू सिन्हा ने मुख्य अतिथि की आसंदी से कहा कि भारत सरकार एवं छत्तीसगढ़ शासन की मंशा अनुसार सत्र 2027 तक पूर्ण साक्षर जिला, प्रदेश, देश बनाने जन जन को साक्षर करने के उद्देश्य को लेकर डाइट में बीआरजी प्रशिक्षण आयोजित है उक्त बीआरजी प्रशिक्षण प्राप्त कर आप अपने विकासखंड में उल्लास केंद्र में असाक्षरों को साक्षर करने वाले स्वयं सेवी शिक्षकों को प्रशिक्षण देंगे जिनके द्वारा जिले के असाक्षर व्यक्ति को साक्षर बनाने का पुण्य कार्य करेंगे। विधायक श्री सिन्हा ने कहा कि जो हमारे 10 वीं और 12 वीं में अध्ययनरत विद्यार्थी अगर स्वयं सेवी शिक्षक का कार्य करते है तो छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्रोत्साहन हेतु 10 अंक बोनस का प्रावधान है साथ ही इस पुण्य कार्य में जिसने भी शिक्षक या अन्य व्यक्ति प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से आहुति दे रहे है उन सभी के लिए कृतज्ञता प्रेषित करता हूं।

प्रशिक्षण को श्री संदीप दीवान पूर्व सांसद प्रतिनिधि,जिला शिक्षा अधिकारी एम आर सांवत, रेखराज शर्मा जिला परियोजना अधिकारी जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण महासमुंद ,के सिंह प्रभारी प्राचार्य जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट महासमुंद ने उपस्थित प्रशिक्षार्थियों को संबोधित किया। प्रशिक्षण में डीआरजी समूह से टेकराम सेन ने उल्लास प्रवेशिका कैसे पढ़ाए, उल्लास संदर्शिका, प्रवेशिका की समझ, ईश्वर चंद्राकर ने स्वयं सेवी शिक्षक की भूमिका, बीआरजी के मार्गदर्शक बिंदु, पाठ योजना एवं श्रीमती बद्रिका ध्रुव ने स्वयं सेवी शिक्षक को कैसे प्रेरित करे एवं गतिविधि पर आपसी सामंजस्य बनाते हुए प्रशिक्षण के प्रथम दिवस की समापन हुआ।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से संदीप दीवान पूर्व सांसद प्रतिनिधि, रमेश साहू, हरबंश सिंह ढिल्लो, विष्णु चंद्राकर, मनोज वर्मा, संतोष साहू व्याख्याता डाइट, नोडल अधिकारी द्वय ईश्वर चंद्राकर महासमुंद, श्रीमती ममता चक्रधारी बागबाहरा, अरुण कुमार देवता पिथौरा, वीरेंद्र साहू बसना, दुष्यंत पटेल सरायपाली सहित समस्त प्रशिक्षार्थी गण उपस्थित थे।

कलेक्टर ने अनाधिकृत रूप से लंबे समय तक अनुपस्थित कर्मचारी पर की कड़ी कार्यवाही

तीन वार्षिक वेतन वृद्धि रूका, अनुपस्थित अवधि को किया गया ब्रेक इन सर्विस

गरियाबंद (समय दर्शन)। राज्य शासन द्वारा शासकीय सेवकों को उनके कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन सुनिश्चित करवाने अनाधिकृत रूप से अनुपस्थित शासकीय सेवकों पर नियमानुसार कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये हैं। उक्त निर्देशानुसार कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने भी जिला अधिकारियों को शासन के निर्देशों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिये है।साथ ही अनाधिकृत रूप से अनुपस्थित अधिकारी-कर्मचारियों पर कार्यवाही भी करने के निर्देश दिये गये है।इसी तारतम्य में कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने लम्बे समय से अनाधिकृत रूप से अनुपस्थित कर्मचारी पर कड़ी कार्यवाही की है। सहायक ग्रेड-03 पद पर पदस्थ कर्मचारी गजेन्द्र ध्रुव को लंबे समय तक अनाधिकृत रूप से अनुपस्थित रहने पर तीन वार्षिक वेतन वृद्धि संचयी प्रभाव से रोकन का दण्ड दिया गया है।साथ ही अनाधिकृत अनुपस्थित अवधि को शासकीय सेवा में व्यवधान ब्रेक इन सर्विस मानते हुए उक्त अवधि को संबंधित कर्मचारी शासकीय सेवा में नहीं थे,माना गया है।यह कार्यवाही कर्मचारी गजेन्द्र ध्रुव के निलंबन पश्चात विभागीय जांच में अधिरोपित आरोप सत्य पाये जाने पर की गई है।उल्लेखनीय है कि तहसील कार्यालय मैनपुर में पदस्थ सहायक ग्रेड-03 गजेन्द्र ध्रुव को लंबे समय से अनाधिकृत रूप से अनुपस्थित रहने के कारण 23 मई 2023 को निलंबित किया गया।निलंबन पश्चात उनके विरूद्ध विभागीय जांच संस्थित की गई।विभागीय जांच प्रकरण में अनाधिकृत रूप से अनुपस्थिति तथा स्पष्टीकरण पत्र का जवाब प्रस्तुत नहीं करने का आरोप अधिरोपित किया गया।जांच प्रकरण में दोनों अधिरोपित आरोप पूर्णत:सत्य सिद्ध पाया गया।आरोप सिद्ध होने पर उक्त कर्मचारी का तीन वार्षिक वेतन वृद्धि रोकने की कार्यवाही तथा उक्त अनुपस्थित अवधि को ब्रेक इन सर्विस माना गया है।

एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट ने अपनी 1000वीं शाखा की शुरुआत की

रायपुर : भारत के गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबीएफसी) क्षेत्र की एक प्रमुख कंपनी एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट कं. लि. ने वाशी, नवी मुंबई में अपनी 1000वीं शाखा खोलने की घोषणा की है। यह ऐतिहासिक घटना देश भर में अपने पदचिन्हों का विस्तार करने और कम पहुंच वाले बाजारों में वित्तीय सेवाएं लाने के प्रति कंपनी की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को चिन्हित करने के लिए, एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट ने इंडिया पोस्ट के साथ मिलकर एक विशेष कवर और माई स्टैम्प जारी किया है। आधिकारिक अनावरण के अवसर पर मुंबई में जापान के महावाणिज्य दूतावास के महावाणिज्यदूत श्री यागी कोजी, महाराष्ट्र सर्किल में डाक सेवाओं (मुख्यालय) के निदेशक श्री अभिजीत बंसोडे और एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट के सीईओ और एमडी श्री शांतनु मित्रा उपस्थित थे। इस महत्वपूर्ण अवसर पर विचार करते हुए, एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट के सीईओ और एमडी श्री शांतनु मित्रा ने कहा, हमारी 1000वीं शाखा का उद्घाटन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जो पूरे भारत में लोगों को औपचारिक ऋण पहुंच प्रदान करने और वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में उनकी मदद करने के लिए हमारी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस उपलब्धि का उत्सव मनाते हुए, हमें डाक विभाग के सहयोग से माई स्टैम्प के साथ एक विशेष कवर जारी करने पर गर्व है, जो कंपनी द्वारा अब तक हासिल की गई वृद्धि और भारत के वित्तीय सेवा क्षेत्र में योगदान के महत्व का प्रतीक है। हमारी यात्रा निरंतर विकास की रही है, हम अपने ग्राहकों की बदलती जरूरतों के अनुकूल होने के साथ ही सभी को वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराने और पूर्ण विकास हासिल करने के हमारे मिशन के प्रति निष्ठावान रहे हैं। 1000वीं शाखा का शुभारंभ एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट के बड़े और विविध भारतीय बाजार में अपनी उपस्थिति को गहरा करने के नीतिगत दृष्टिकोण का प्रमाण है। 2007 में अपनी स्थापना के बाद से, कंपनी लगातार विकास करते हुए एक अखिल भारतीय संस्थान के रूप में विकसित हुई है जो अब 670 से अधिक शहरों और 70,000 गांवों में काम करती है।

एक तरफ शासन-प्रशासन बेहतर शिक्षा देने का दवा कर रहे है वहीं दूसरी ओ शासकीय प्राथमिक शाला रिसामा में शिक्षक समय पर नहीं आते

बालोद (समय दर्शन)। एक तरफ शासन-प्रशासन बेहतर शिक्षा देने का दवा कर रहे है वहीं दूसरी ओ शासकीय प्राथमिक शाला रिसामा में शिक्षक समय पर आते नहीं है। इस वजह से मंगलवार की सुबह शासकीय प्राथमिक शाला रिसामा के पालकों ने स्कूल में ताला जड़ दिया। छात्रों की एकमात्र मांग है कि उन्हें पढ़ाने के लिए स्कूल में शिक्षक नियुक्त किए जाएं। इस स्कुल में कक्षा पहेली से पाँचवी लगभग 64 बच्चे अध्ययनरथ है और तीन शिक्षक है।

यह समस्या दुर्ग जिले के ग्राम रिसामा के प्राथमिक शाला में विगत 15 दिनों से विधायक प्रतिनिधि और ग्रामीणों द्वारा स्कूल का निरीक्षण किया जा रहा था जिसमें रोज प्राथमिक शाला के सभी शिक्षक अनुपस्थित पाया गया और विगत लम्बे समय से स्कूल में प्रार्थना भी नही हो रहा है।

पालको ने बताया की कक्षा 5वी के बच्चों को नाम भी लिखने नही आता हैं और शिक्षकों को बोलने पर शिक्षक द्वारा धमकी दिया जाता हैं कि ज्यादा से ज्यादा हमारा ट्रांसफर बस हो सकता है हमरा 58 साल तक का नौकरी कोई नही रोक सकता इस तरह से धमकी दी जाती है। स्कूल की इस स्थिति को देखकर ग्रामीणों ने स्कूल पर ताला लगा कर विरोध किया और विधायक ललित चंद्राकर को तुरंत कार्यवाही के लिए ज्ञापन दिया गया। लेकिन ताला लगाने के करीबन दो घंटे बाद भी न तो शिक्षा विभाग का कोई अधिकारी पहुंचा, और न ही प्रशासन की ओर से कोई जांचकर्ता या अधिकारी भेजा गया। जिसमें प्रमुख रूप से भाजयुमो महामंत्री डिलेश गब्बर साहू ,विधायक प्रतिनिधि रामदास साहू,मन्नु लाल साहू,लेखुदास साहू,जिला किसान महामंत्री अजित चन्दकर ,भाजयुमो अध्यक्ष प्रवीण यदु उपाध्यक्ष शुभम वर्मा ,पालकएवं ग्रामीण डोमन लाल ,नवनीत,संजय, ललित पांडेय,हेमु दास, जोधन लाल साहू,रेख लाल पटेल, मना साहू ,युवराज निषाद,तरुण निर्मल,रवि निर्मलकर,विनय ठाकुर ,देवेंद्र ठाकुर, राजा निर्मलकर,तोरण गुप्ता, ओमकार, अमरू,बीरबल ठाकुर,भूपाल निर्मलकर, गैंदालाल राजेंद्र सेन,नीलकंठ, धनंजय यादव,मोती साहू,उमेन्द्र विश्वकर्मा, हेमंत साहू एवं अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला सहकारी विकास समिति की द्वितीय बैठक आयोजित

गरियाबंद (समय दर्शन)। कलेक्टर दीपक अग्रवाल की अध्यक्षता में विगत दिवस जिला सहकारी विकास समिति की द्वितीय बैठक आयोजित किया गया।कलेक्टर ने जिले में सहकारिता से संबंधित कार्यों एवं केन्द्र सरकार द्वारा संचालित सहकार से समृद्धि कार्यक्रम के तहत किये जा रहे कार्यो की जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश दिये। बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत गरियाबंद,अतिरिक्त कलेक्टर जिला गरियाबंद,उप संचालक कृषि,उप संचालक पशुपालन,सचिव एवं संयोजक सदस्य सहायक आयुक्त सहकारिता जिला गरियाबंद,सहायक संचालक मत्स्य पालन विभाग,नोडल अधिकारी जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित रायपुर प्रक्षेत्र गरियाबंद भी शामिल हुए। बैठक में सचिव एवं संयोजक सदस्य सहायक आयुक्त सहकारिता जिला गरियाबंद द्वारा भारत सरकार द्वारा संचालित किये जा रहे सहकार से समृद्धि के अंतर्गत जिले में क्रियान्वित किये जा रहे योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गयी।जिले में पैक्स कम्प्यूटरीकरण के तहत सभी 67 पैक्स वर्तमान में गो-लाईव हो चुके है। आमजन तक सुलभ बनाने के लिए पैक्स में सीएससी की स्थापना कर 39 प्रकार की सेवाएं प्रारंभ की गयी है।बैंकिंग लेन-देन को सुलभ बनाने के लिए सभी पैक्स में माईक्रो एटीएम की स्थापना की गयी है। जहाँ एक बार में राशि 10 हजार रूपये जमा एवं निकासी की सुविधा उपलब्ध है, जिससे शाखाओं में जाने की जरूरत नही है। पैक्स को बहुआयामी समिति के रूप में विकसित की जा रही है। प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केन्द्र योजना की विस्तृत चर्चा के साथ-साथ आरआईडीएफ योजना के तहत 21 पैक्स में कार्यालय सह गोदाम निर्माण पूर्ण होने की जानकारी दी गयी। जिले में जल जीवन मिशन योजना के तहत पैक्स बारूला समिति को योजना के संचालन एवं संधारण कार्य हेतु नामित किया गया है।

पोषण माह अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

विधायक, कलेक्टर ने पोषण के महत्व को बताते हुए लोगों को किया जागरूक

गरियाबंद (समय दर्शन)। जन समुदाय तक स्वास्थ्य पोषण एवं स्वच्छता संबंधित व्यापक प्रचार-प्रसार एवं प्रभावी व्यवहार परिवर्तन हेतु जन आंदोलन के रूप में प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पोषण माह का आयोजन किया जा रहा है।इसी संदर्भ में जिले में 30 सितम्बर तक पोषण माह का आयोजन किया जा रहा है।इसी तारतम्य में आज वन विभाग गरियाबंद के ऑक्सन हॉल में जिला स्तरीय पोषण माह कार्यशाला का आयोजन किया गया।कार्यशाला में राजिम विधायक रोहित साहू,नगर पालिका अध्यक्ष अब्दुल गफ्फार मेमन एवं कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने लोगों को राष्ट्रीय पोषण माह का महत्व बताते हुए कुपोषण को दूर करने के लिए सरकार द्वारा चलाये जा रहे अभियान के बारे में जागरूक किया।विधायक श्री साहू ने कहा कि पोषण माह अंतर्गत पोषण जागरूकता के विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर लोगों को पोषण के महत्व एवं लाभ के बारे में बताया जा रहा है।विभिन्न थीम जैसे एनिमिया,वृद्धि निगरानी,पूरक आहार,पोषण भी पढ़ाई भी बेहतर प्रशासन,पारदर्शिता और कुशल सेवा वितरण के लिए प्रौद्योगिकी एवं समग्र पोषण से संबंधित गतिविधियां आयोजित की जा रहे हैं।उन्होंने इस अभियान में शामिल होकर महिलाओं एवं बच्चों को कुपोषण से मुक्ति दिलाने अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने की अपील की।इस अवसर पर कार्यक्रम स्थल में विधायक एवं कलेक्टर ने ब्लड एवं शुगर की जांच कराई। साथ ही 60 से अधिक किशोरी बालिकाओं एवं महिलाओं एनीमिया जांच कराई।

कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि पोषण माह के प्रभावी सुचारू एवं परिणामूलक आयोजन एवं गतिविधियों के आयोजन में जनप्रतिनिधियों,पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों,स्थानीय निकाय के प्रतिनिधि सहयोगी विभागों,स्वयंसेवी संस्थाओं,सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों सहित महिला स्व.सहायता समूहों,महिला मंडली,नेहरू युवा केंद्रों,नेशनल कैडेट कोर,राष्ट्रीय सेवा योजना आदि की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है।महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यक्रम अधिकारी अशोक पाण्डेय ने राष्ट्रीय पोषण माह के संबंध में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।उन्होंने बताया कि इस वर्ष भी विभिन्न सहयोगी विभागों के मैदानी अमले के मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित करते हुए जिला,विकासखंड एवं ग्राम स्तर पर प्रत्येक केंद्र स्तर पर पोषण माह का आयोजन किया जा रहा है।कार्यक्रम स्थल में महिलाओं द्वारा व्यंजन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। साथ ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा महिलाओं का एनीमिया जांच की गई।इस अवसर पर जनपद अध्यक्ष लालिमा ठाकुर, नगर पालिका के उपाध्यक्ष सुरेन्द्र सोनटेके,जिला पंचायत सदस्य चन्द्रशेखर साहू,मधुबाला रात्रे,फिरतुराम कंवर, अनिल चन्द्राकर,सहित विभागीय अधिकारी-कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। पूर्व वर्षों में पोषण माह एवं पोषण पखवाड़ा में सभी सहयोगी विभागों एवं डेवलपमेंट संस्थाओं का सक्रिय एवं परिणाममूलक सहयोग प्राप्त होता रहा है।पोषण माह 2024 का मुख्य उद्देश्य पंचायतों को सक्रिय करना है, इस हेतु ग्राम स्तर पर सरपंच एवं ग्राम पंचायतों को गतिविधियों का आधार मानते हुए जन आंदोलन को जनभागीदारी के रूप में परिवर्तित करना है।राष्ट्रीय पोषण माह के आयोजन के लिए दैनिक गतिविधियों का कैलेंडर बनाया गया है।इसके संचालन के लिए विभिन्न विभाग समन्वय से गतिविधियों का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित करेंगे।उक्त के दौरान की जाने वाली समस्त गतिविधियों को जनआंदोलन के डैशबोर्ड पोर्टल पर प्रतिदिन इंद्राज किया जायेगा।सहयोगी विभाग की भी गतिविधियों की प्रगति की डाटा एंट्री जनआंदोलन डैशबोर्ड पर की जायेगा।

बेटे की पिटाई का बदला लेने नेत्रहीन पिता ने सुपारी देकर हत्या कराई

कवर्धा (समय दर्शन)। दशरंगपुर चौकी के चुचरुंगपुर गांव के तालाब में 2 सितंबर को तैरती हुई मिली युवक के शव के अंधे कत्ल की गुत्थी को पुलिस ने 24 घंटे के भीतर सुलझा लेने का दावा किया है। साथ ही हत्या के पीछे आपसी रंजिश के चलते ढाई लाख की सुपारी देने की बात भी सामने आया है। पुलिस ने दो आरोपियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर न्यायिक रिमांड में जेल भेज दिया है।

पुलिस ने बताया कि थाना पिपरिया क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले पुलिस चौकी दशरंगपुर का मामला है। जहां ग्राम फंदातोड़ निवासी तीस वर्षीय रोहित चंद्रवंशी की हत्या कर शव को चुचरुंगपुर के तालाब में फेक दिया था।

आरोपी नेत्रहीन नकुल ने रोहित चंद्रवंशी की हत्या करने जग्गु को 2 लाख 50 हजार रुपये की सुपारी दी थी, जिसमें से नकुल ने 25 हजार रुपए दिए थे। बाकी रकम हत्या करने के बाद देने की बात कही थी। उसके बाद से ही आरोपी जग्गु रोहित की हत्या करने के फिराक में घूम रहा था। हत्या करने से पहले उसने मृतक रोहित चंद्रवंशी से दोस्ती की। फिर एक दो दिन से जमकर शराब पी और 2 सितम्बर सोमवार के दिन दोनों

ने फिर जमकर शराब पी, तभी आरोपी जग्गु ने मौका देखकर रोहित चंद्रवंशी के गले को रस्सी से दबाकर अधमरा कर दिया। उसके बाद हथौड़े से सिर पर ताबड़तोड़ हमला कर मौत के घाट उतार दिया। वहीं जुर्म को छुपाने शव को तालाब में फेंक कर मौके से फरार हो गया। पुलिस ने बताया कि दो साल पूर्व मृतक रोहित चंद्रवंशी ने चार पांच साथियों के साथ मिलकर आरोपी नेत्रहीन नकुल के बेटे की जमकर पिटाई कर दी थी। घटना में गंभीर चोट आई थी, जिससे आज भी आरोपी नकुल का बेटा चल फिर नहीं सकता। फिर दोनों के बीच 15 लाख रुपए में मामले को रफादफा करने सौदा हुआ था। लेकिन मृतक रोहित ने नकुल को 15 लाख रुपए नहीं दिया। इसी कारण उससे बदला लेने के लिए नेत्रहीन नकुल ने हत्या की साजिश रची थी। आखिरकार रोहित चंद्रवंशी को मौत के घाट उतार दिया और दशरंगपुर चौकी के चुचरुंगपुर गांव के तालाब में रोहित चंद्रवंशी की शव तैरती हुई मिली थी, जिसमें सिर पर गंभीर चोट के निशान देखा गया, जिससे पुलिस को हत्या की आशंका हुई। पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए मृतक के मोबाइल को खंगाला उसके बाद आरोपी तक पुलिस पहुँच गई।

इस सम्पूर्ण कार्यवाही में जिले के पुलिस अधीक्षक डॉ अभिषेक पल्लव, एडिशनल एसपी, थाना प्रभारी पिपरिया कमलकांत शुक्ला चौकी प्रभारी दशरंगपुर अरविन्द साहू, साइबर सेल की टीम के साथ थाना पिपरिया पुलिस व चौकी दशरंगपुर पुलिस का सराहनीय योगदान रहा।

खबर-खास

जिले में 39 वां नेत्र दान पखवाड़ा मनाया

कवर्धा (समय दर्शन)। जिला मुख्यालय कवर्धा में बुधवार को 39 वां नेत्र दान पखवाड़ा मनाया गया। सीएमएचओ कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने नेत्रदान का महत्व बताते हुए लोगों से नेत्रदान करने की अपील की। सीएमएचओ डॉक्टर बीएल राज ने नेत्र दान सहित अंग दान के महत्व को रेखांकित करते हुए अपने विचार व्यक्त किया। नेत्र सर्जन डॉक्टर क्षमा चोपड़ा ने बताया कि एक व्यक्ति के नेत्रदान से आधुनिक तकनीक के अनुसार कॉर्निया के लेयर की जरूरत अनुसार लगभग 4 से 6 अंधे लोगो को प्रत्यारोपण कर रोशनी प्रदान कर सकते हैं। नेत्र सहायक अधिकारी मनीष जॉय ने बताया कि जिले में 2018 में कुसुमघटा से मृतक वर्मा परिवार से नेत्र दान हुआ था। इसके बाद 6 वर्ष हो गए। अभी तक जिले में नेत्रदान नहीं हुआ है। उन्होने सभी लोगो से मरणोपरांत नेत्रदान करने की अपील की, जिससे किसी के जीवन में छाए हुए अंधेरे को हम रोशनी दे सकें। अंत में डीपीएम अनुपमा तिवारी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में सेवानिवृत डॉक्टर एनके यदु, डॉक्टर गौरव सिंह परिहार, वरिष्ठ नागरिक समिति के श्री जैन मितानिन समन्वयक सेवानिवृत कर्मचारी, विवेकानंद अकादमी के सदस्य स्कूल के बच्चे सहित नेत्र सहायक अधिकारी प्रभात गुप्ता, धीरेंद्र शर्मा, राजेश बिसारिया सहित अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

स्टार हेल्थ इंश्योरेंस बनी ब्रेल लिपि में बीमा पॉलिसी लॉन्च करने वाली भारत की पहली कंपनी

मुंबई। भारत की सबसे बड़ी खुदरा स्वास्थ्य बीमा कंपनी, स्टार हेल्थ एंड अलाइड इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड (स्टार हेल्थ इंश्योरेंस) ने आज उद्योग में पहली बार ब्रेल लिपि में एक बीमा पॉलिसी लॉन्च करने की घोषणा की। यह पॉलिसी समावेश और सुलभता के प्रति स्टार हेल्थ इंश्योरेंस की प्रतिबद्धता बढ़ाते हुए, यह सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है कि दृष्टिबाधित और नेत्रहीन लोगों तक जानकारी की पहुंच हो और अपने स्वास्थ्य तथा वित्त संबंधी मामलों पर स्वतंत्र निर्णय ले सकें। स्टार हेल्थ ने भारत में मौजूद 34 मिलियन दृष्टिबाधित/दृष्टिहीन लोगों को आय सृजन के अवसरों के साथ आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए विविधता और वित्तीय समावेश अभियान भी शुरू किया है। यह समाज के इस वंचित, हाशिए पर पड़े वर्ग को प्रशिक्षण और कौशल प्रदान कर उन्हें कंपनी के साथ स्वास्थ्य बीमा एजेंट बनने में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रक्रिया की खूबसूरती यह है कि यह उन्हें अपनी गति से, अपने परिचित परिवेश में काम करने और अपने जीवन की ज़िम्मेदारी खुद संभालने में मदद करता है।

लैंसर कंटेनर लाइन्स लिमिटेड ने 10,000 टीईयू (कंटेनर्स) लीज पर देने के लिए इंडोनेशियाई कंपनी के साथ करार किया

मुंबई : देश की अग्रणी एकीकृत शिपिंग और लॉजिस्टिक्स समाधान प्रदाताओं में से एक, 'लैंसर कंटेनर लाइन्स लिमिटेड' ने एक प्रमुख इंडोनेशियाई कंपनी, पी.टी.मैप ट्रांस लॉजिस्टिक, सुरबाया, के साथ 10,000 टीईयू (बीस-फुट कंटेनर और चालीस-फुट कंटेनर) लीज पर देने के लिए एक करार किया है। करार पर लैंसर कंटेनर लाइन्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री खालिक चटाईवाला और पी.टी.मैप ट्रांस लॉजिस्टिक, सुरबाया के निदेशक श्री प्रफुल्ल झा की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। लैंसर कंटेनर्स लाइन्स लिमिटेड का प्रबंधन इस रणनीतिक करार को लीजिंग गतिविधियों को बढ़ाने में एक कदम के रूप में देखता है जिससे कंपनी को अपने व्यवसाय का विस्तार करने और शेयरधारकों के मूल्य को बढ़ाने में मदद मिलती है। इस करार से कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है, क्योंकि इससे कंपनी का समग्र विकास होगा जिसके परिणामस्वरूप कंपनीकी बाजार स्थिति मजबूत होगी। इससे पहले कंपनी ने अगले कुछ वर्षों के लिए अपनी मेगा विस्तार योजनाओं की घोषणा की थी। कंपनी का लक्ष्य वित्त वर्ष 2026 तक अपनी टीईयू (बीस-फुट कंटेनर और चालीस-फुट कंटेनर) क्षमता को वित्त वर्ष 2024 में दर्ज लगभग 20,000 टीईयू से बढ़ाकर 45,000 टीईयू तक करना है और बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए कंपनी हर महीने 200-300 कंटेनरों को शामिल करके अपनी कंटेनर इन्वेंट्री को लगातार बढ़ाने का इरादा रखती है।

भारतीय जनता पार्टी देश भक्त पार्टी है - अभिषेक सिंह

भाजपा सदस्यता अभियान का भव्य शुभारंभ

कवर्धा (समय दर्शन)। भाजपा के संगठन महापर्व सदस्यता अभियान का बुधवार 4 सितंबर को ज़िले में भव्य शुभारंभ हुआ। कवर्धा के यूथ क्लब में पूर्व सांसद अभिषेक सिंह ने सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया। कार्यकर्ताओं से खचाखच भरे कार्यक्रम में पूर्व सांसद अभिषेक सिंह ने कहा कि सभी कार्यकर्ता गली-गली घर-घर पहुंचकर भाजपा का सदस्य बनाकर सदस्यता के लक्ष्य को पार करेंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, मोर्चा-प्रकोष्ठ सदस्यता के लक्ष्य को रिकॉर्ड स्तर पर पूरा करें।

पूर्व सांसद श्री सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी देश भक्त पार्टी है हमारे पार्टी में सभी भाषण के पहले भारत माता की जयघोष एवं छत्तीसगढ़ महतारी की जयकारा होता है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के गठन को लेकर आज तक के विकास यात्रा को बताया। वह सभी को विश्व में सबसे बड़ी पार्टी में जुड़ने का आह्वान किया। उन्होने कहा कि पंडित दीनदयाल के अंत्योदय के सपने को साकार करने भाजपा ही है।

सदस्यता कार्यक्रम में पूर्व विधायक एवं जिलाध्यक्ष अशोक साहू, डा. सियाराम साहू, रामकुमार भट्ट, अनिल ठाकुर, संतोष पटेल, जसविंदर बग्गा, क्रांति गुप्ता, मनीराम साहू सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ उपस्थित थे।

हर बूथ में दो सौ नए सदस्य बनाने का लक्ष्य मिला- अशोक साहू

पूर्व विधायक एवं जिलाध्यक्ष भाजपा अशोक साहू ने बताया कि भाजपा का सदस्यता अभियान के पहले ही दिन कार्यक्रम स्थल में 400 सदस्य बने हैं। यह अभियान 31 अक्टूबर तक चलेगा। इस सदस्यता अभियान से बीजपी ने जिले के 804 बूथों में दो दो सौ नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है। इस तरह जिले में एक लाख 60 हजार से अधिक और पूरे छत्तीसगढ़ से भाजपा ने 50 लाख नए सदस्य बनाने का लक्ष्य तय किया है। यह लक्ष्य सभी पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं की निष्ठा और सहयोग से पूरा कर लिया जाएगा।

डैम कैपिटल एडवाइजर्स ने सेबी के पास दाखिल किया डीआरएचपी

रायपुर। डैम कैपिटल एडवाइजर्स लिमिटेड ने पूंजी बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। डैम कैपिटल वित्त वर्ष 2022 से 2024 तक राजस्व सीएजीआर के हिसाब से भारत में सबसे तेजी से बढ़ने वाला निवेश बैंक है। अपने समकक्षों की तुलना में डैम कैपिटल का वित्त वर्ष 2024 में प्रॉफिट मार्जिन सबसे अधिक है। वित्त वर्ष 2024 में आईपीओ और क्यूआईपी की संख्या के आधार पर 12.1त्न बाजार हिस्सेदारी के साथ यह भारत के अग्रणी निवेश बैंकों में से एक था। डीएएम कैपिटल (द्ध) निवेश बैंकिंग के क्षेत्रों में इक्विटी कैपिटल मार्केट्स (ईसीएम), विलय और अधिग्रहण (एम एंड ए), निजी इक्विटी (पीई), और संरचित वित्त सलाहकार; और (द्धद्ध) ब्रोकिंग और शोध शामिल संस्थागत इक्विटी के क्षेत्रों में वित्तीय समाधानों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। कंपनी के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम में इन्वेस्टर सेलिंग शेयरहोल्डर्स - मल्टीपल्स अल्टरनेट एसेट मैनेजमेंट, आरबीएल बैंक, ईज़ी एक्सेस फाइनेंशियल सर्विसेज और नरोत्तम सेखसरिया द्वारा 32.06 मिलियन शेयरों तक की ऑफर फॉर सेल शामिल है। प्रमोटर धर्मेश अनिल मेहता भी अपनी हिस्सेदारी का एक छोटा हिस्सा बेच रहे हैं।

(NOTICE U/S 72 OF THE INDIAN PARTNERSHIP ACT 1932)

Notice is hereby given that partnership firm carrying on business under the name and style of "Dream home Developers" vide Partnership Deed dated 04/01/2014 subsequent amended on 01/04/2016, bearing Regn. No. D.R/541 of 2014 dated 20/01/2014, Following changes took place in the firm w.e.f. 1" Day of September 2024.

That principal place of business has been changed. Details of Previous Place and New Principal place are as under:-

PREVIOUS PLACE	NEW PLACE
Amdi Mandir 6, Ward 24, Durg-491001 (C.G.)	Ganga Plaza, Bhakti Marg Near Dixit Lodge, Durg-491001 (C.G.)

Naveen Gupta S/o Late Raja Babu Gupta resident of House No. 223, Opposite Polytechnic College, Pandav Nagar, Shahdol (M.P.) 484001 has admitted in partnership firm from 1 Day of September 2024 as partner.

Further take notice that the business will thenceforth be carried on by the remaining/continuing partners under the old name and style (ie. Dream Home Developers), at the New Place after that date.

For Dream Home Developers
Partner

गांजा बेचते युवक गिरफ्तार

भिलाई। दुर्ग जिले की भिलाई नगर पुलिस ने एक युवक का अवैध रूप से गांजा बेचते हुए गिरफ्तार किया है तथा उसके पास से 1 किलो 970 ग्राम गांजा बरामद किया है। मिली जानकारी के अनुसार थाना भिलाई नगर मे मुखबीर से सूचना मिली कि, शीतला तालाब के पास गार्डन गेट चेक पोष्ट रुआबांधा बस्ती भिलाई मे जयप्रकाश उर्फ टोपु नामक व्यक्ति अवैध लाभ अर्जित करने के उद्देश से एक सफेद रंग के प्लास्टिक बोरी मे अवैध मादक पदार्थ गांजा बिक्री करने के लिये रखा हुआ है।

फ़िलाटेक्स फ़ैशन्स लिमिटेड का खनन कार्य करने वाली सहायक कंपनी ने हासिल किए कुल 661 करोड़ रुपए के निर्यात ऑर्डर

हैदराबाद : हैदराबाद स्थित अग्रणी सॉक्स एवं कॉटन उत्पाद निर्माता कंपनी फिलाटेक्स फैशन लिमिटेड (BSE – 532022, NSE – FILATFASH) की सहायक कंपनी फिलाटेक्स माइंस एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड को एक महीने में कुल मिलाकर 661 करोड़ रुपए (78,875,000 डॉलर) के निर्यात ऑर्डर हासिल हुए हैं। खनन व्यवसाय में कार्यरत कंपनी की सहायक कंपनी, फिलाटेक्स माइंस एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड ने 29 अगस्त, 2024 को घोषणा की कि उसे 1,59,000 टन पॉलिश्ड मार्बल टाइलों की आपूर्ति के लिए गिनी गणराज्य स्थित कंपनी, सोसाइटी डीआईएमओ - बीटीपी एसएआरएल (सडीबीएस) से 5 वर्षों से अधिक की अवधि के लिए ऑर्डर मिला है, जिनकी कीमत 43,875,000 अमेरिकी डॉलर (करीब 368 करोड़ रुपये) होने का अनुमान है। एसडीबीएस 14 अफ्रीकी देशों में 5000 से अधिक डीलर नेटवर्क के साथ ग्रेनाइट और मार्बल की मुख्य वितरक कंपनी है।

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग

मामले की श्रेणी: राजस्व
संदर्भः- जिला- दुर्ग तहसील-दुर्ग प.ह.न.-00019 दुर्ग ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक-. आरडी 202324430103900234

ईश्तहार

तहसील दुर्ग के प.ह.न. 00019 के अंतर्गत ग्राम दुर्ग के वर्तमान भूमिस्वामी प्रधान श्रीआर्य प्रतिनिधि सभा पिता/पति-मध्यप्रदेश एवं विदर्भ पता-दुर्ग के द्वारा धारित भूमि खसरा क्रमांक 1314/1(0.0223) में प्रस्तावित भूमिस्वामी/क्रेता शंशाक शर्मा पिता/पति-स्व. प्रदीप शर्मा पता-आर्यनगर, दुर्ग, श्रीमती निधी शर्मा पिता/पति-स्व. प्रदीप शर्मा पता-आर्यनगर, दुर्ग, शुभांगी शर्मा पिता/पति-स्व. प्रदीप शर्मा पता-आर्य नगर, दुर्ग, श्रीमती उर्वशी शर्मा पिता/पति-स्व. प्रदीप शर्मा पता-आर्यनगर, दुर्ग के नाम पर पंजीयन/फ़ौती होने के उपरांत नामांतरण / अभिलेख दुरुस्ती / खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक 18/09/2024 को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय न्यायालय तहसीलदार दुर्ग पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं / अधिवक्ता / आममुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 04/09/2024 को जारी किया जाता है।

मुहर

तहसीलदार
दुर्ग

// न्यायालय नजूल अधिकारी कबीरधाम (छ.ग.) //

रा.प्र.क्र. ई.पंजी. /202408082200023/अ-6
वर्ष 2023-24

// ईश्तहार//

आवेदिका सागारिका भुनिया पति प्रशांत भुनिया साकिन कवर्धा जिला कबीरधाम द्वारा नजूल नगर कवर्धा स्थित शीट क्र. 11 एबीसी -भूखण्ड क्र 47 क्षेत्रफल 65.00 व.मी. जो नजूल संधारण खसरा में प्रहलाद पाण्डेय पिता माधोप्रसाद पाण्डेय के नाम पर दर्ज है। उक्त भू-खण्ड को आवेदिका द्वारा मूल धारक से पंजीकृत बयनामा दिनांक 06.08.2024 द्वारा क्रय किये जाने से नजूल अभिलेख में अपना नाम दर्ज किये जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव नामांतरण के संबंध में जिस किसी व्यक्ति एवं संस्था का उजर अथवा आपत्ति हो तो वे इस न्यायालय में दिनांक 11/9/24 तक स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से आपत्ति पेश कर सकते है। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त आपत्ति पर मान्य नहीं किया जायेगा। आज दिनांक 23/8/24 को इस न्यायालय के पद मुद्रा एवं हस्ताक्षर से जारी किया गया है।

जारी दिनांक 23.08.2024
पेशी दिनांक 11.09.2024

मुहर

नजूल अधिकारी
जिला- कबीरधाम

// न्यायालय नायब तहसीलदार कवर्धा जिला-कबीरधाम (छ.ग.)//

रा.प्र.क्र. ब/121 वर्ष 2023-24 ई कोर्ट नं.- 2024090808000 ग्राम भेदली, प.ह.नं.-19

// ईश्तहार//

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक तामेश्वर सिंह ठाकुर पिता शंकर सिंह ठाकुर जाति गोंड, निवासी ग्राम कवर्धा द्वारा ग्राम भागुटोला प.ह.नं. 16 में आवेदक के स्वामित्व खाता की भूमि ख.नं. 32/23 रकबा 0.053 हेक्टे. कुल लगान 0.050 रू. राजस्व अभिलेख में दर्ज है। उक्त आवेदित भूमि का मूल ऋणपुस्तिका गुम हो जाने के कारण डुप्लीकेट ऋणपुस्तिका प्रदाय किये जाने हेतु बी-1, खसरा पांचसाला, शपथ पत्र, थाना रिपोर्ट एवं चलान की प्रति सहित आवेदन पेश किया गया है। जिसके संबंध में प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है जिसकी सुनवाई दिनांक 16/09/2024 को नियत किया गया है।

अत: उक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति / संस्था को कोई दावा/आपत्ति पेश करना हो तो वे स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर इस न्यायालय में नियत समय व तिथि तक दावा-आपत्ति पेश कर सकते हैं। नियत तिथि के पश्चात् प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार आज दिनांक को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालयीन पद मुद्रा से जारी किया गया।

जारी दिनांक -02.09.2024
पेशी दिनांक- 16.09.2024

मुहर

नायब तहसीलदार
कवर्धा

कार्यालय नगर पालिक निगम रायपुर (छ.ग.)
--:: जोन क्रमांक- 07 ::--
निविदा आमंत्रण सूचना
// प्रथम निविदा //

क्रमांक 22/ जोन क्र.-07/न.पा.नि./2024 — रायपुर, दिनांक 03/09/2024

नगर पालिक निगम रायपुर द्वारा निम्नलिखित कार्यों हेतु छ.ग. शासन लोक निर्माण विभाग में एकीकृत पंजीकृत ठेकेदारों से कम / अधिक प्रतिशत दर में लो.नि.वि. में प्रभावशील (भवन / सड़क) (एसओआर 01-01-2015) लो.स्वा.यां. विभाग मे प्रभावशील (एसओआर 07.02.2013) एवं (एसओआर 01.06.2020) एवं आज दिनांक तक संशोधित दर अनुसार निर्धारित विहित प्रपत्र में पंजीकृत डाक, स्पीड पोस्ट के माध्यम से तीन लिफाफा पध्दति से नियमानुसार सीलबंद निविदाएं जोन आयुक्त, जोन क्रमांक 07, नगर पालिक निगम, रायपुर के पते पर आमंत्रित की जाती है। कार्य की अमानत राशि का एफ.डी.आर., आयुक्त, नगर पालिक निगम, रायपुर के नाम से मान्य होगा एवं मूल एफडी.आर. एवं शपथ पत्र के साथ एक छायाप्रति भी संलग्न करें। निविदा का विवरण निम्नानुसार है।

1. निविदा प्रपत्र जारी करने की अंतिम तिथि :- दिनांक 24.09.2024 संध्या 5.30 बजे तक
2. निविदा प्रपत्र जमा करने की अंतिम तिथि :- दिनांक 27.09.2024 संध्या 5.00 बजे तक
3. निविदा प्रपत्र खोलने की तिथि :- दिनांक 27.09.2024 संध्या 5.30 बजे तक

कार्य का विवरण निम्नानुसार है :-

क्र.	कार्य का विवरण	निविदा फार्म	आगणित राशि	अमानती राशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य	ठेकेदार की श्रेणी	समय अवधि
1.	सामान्य मद से शहीद मनमोहन सिंह बक्शी वार्ड क्र. 23 अंतर्गत कला केन्द्र में बिल्डिंग में पोताई एवं 2 डी पोताई कार्य। (द्वितीय निविदा)	A	1781000	14000	750	लो.नि.वि. में एकल पद्धति से डी श्रेणी या उससे उच्चतर श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदार/फर्म	60 दिन
2.	जोन क्र. 07 अंतर्गत विभिन्न स्थानों में क्षतिग्रस्त पाईप लाईन वाल्व चेम्बर मरम्मत कार्य।	A	200000	2000	300		60 दिन
3.	जोन क्र. 07 अंतर्गत विभिन्न स्थानों में सी.सी. पेंच मरम्मत का कार्य।	A	200000	2000	300		60 दिन
4.	जोन क्र. 07 अंतर्गत पावर पम्प मरम्मत 1.25" खराब रोल पाईप को बदलने का कार्य।	A	286000	3000	750		60 दिन
5.	जोन क्र. 07 अंतर्गत विभिन्न स्थानों में पी.व्ही.सी. टैंक को बदलने का कार्य।	A	283000	3000	750		60 दिन

नियम एवं शर्तें :- (भाग 1)

01. निविदा संबंधित समस्त दस्जावेज तीन लिफाफा पद्धति पर आमंत्रित होकर तद्अनुसार ही प्रस्तुत की जानी होगी । **प्रथम लिफाफा** में राष्ट्रियकृत बैंक की ई.एम.डी. / एफडी. आर./शपथ पत्र/एवं समस्त दस्तावेज, **दुसरे लिफाफे** में सिर्फ निविदा प्रपत्र सील बंद कर **दोनो लिफाफो को तीसरे लिफाफे** में सील बंद कर निविदा रजिस्टण्ड/ स्पीड पोस्ट द्वारा निर्धारित समयावधि में प्रस्तुत करना होगा । 02. निविदा संबंधी समस्त अधिकार आयुक्त नगर पालिक निगम को होगा। विस्तृत जानकारी जोन कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। 03. जीवित पंजीयत होना अनिवार्य है। 04 GST 05. GST RI. last 6 month 6. ITR last 3 years 7. Bank Solvency Certificate 08. Pan card संबंधी दस्तावेज भी प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा ।

नियम एवं शर्तें :- (भाग 2)

1 नये पंजीकृत ठेकेदार/फर्म हेतु GST Reg. तिथि के अनुसार GST Return last Month का देना होगा ।
2 नये पंजीकृत ठेकेदार/फर्म पंजीयन तिथि के अनुसार I. T. R. एक साल का मान्य होगा।
3 निविदा फार्म कार्यलय से उपलब्ध होगी। शेष नियम एवं शर्ते यथावत रहेगी।

घरो से निकलने वाले सूखा और गीला कचरे को सफाई मित्र (वाहन) को देवें।

जोन कमिश्नर
जोन क्रमांक 07
नगर पालिक निगम, रायपुर

संक्षिप्त-खबर

साइंस कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा पोषण आहार सप्ताह का आयोजन

दुर्ग (समय दर्शन)। शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र इकाई द्वारा पोषण सप्ताह 1 से 7 सितंबर के अंतर्गत शासकीय प्राथमिक शाला कसारीडीह में पोषण सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीकी ने हरी झंडी दिखाई और संबोधित करते हुए कहा कि संतुलित आहार ही जीवन का आधार है इसके साथ ही कसारीडीह विद्यालय के प्रधान पाठक महोदया मान बाई ठाकुर एवं सहायक शिक्षक नमीता गुप्ता,लीलावती वर्मा,पल्लवी लोहबारे का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। जिसमें बच्चों को पोषण संबंधी पोषक तत्वों की जानकारी उपलब्ध कराई गई।उन्होंने बच्चों को बताया गया कि पोषण हमारे मनोविकारों को किस प्रकार दूर करता है साथ ही साथ बच्चों को अन्य गतिविधियां जैसे गीत, कविता, नुक्कड़ नाटक एवं जुंबा डांस करवाया गया। इस कार्यक्रम को विशेष बनाने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र इकाई के कार्यक्रम अधिकारी प्रोफेसर तरुण कुमार साहू सहायक कार्यक्रम अधिकारी प्रोफेसर सुदेश साहू का सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के वरिष्ठ स्वयंसेवक मोरध्वज, सतेक, रीतिक, मीनेश, द्रविण, टुकेश्वर, हरीश, मृदुल, ललित, टेम प्रकाश, कुंदन कुमार एवं अन्य स्वयंसेवकों की सक्रिय भागीदारी रही।

होटल संचालक से निगम आयुक्त ने उठवाया कचरा, लगाई जमकर फटकार, बोले दोबारा सड़क पर मत फेंकना

दुर्ग (समय दर्शन)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत आज आयुक्त लोकेश चन्द्राकर द्वारा स्वास्थ्य अमले के साथ रोज की तरह शहर साफ-सफाई व्यवस्था देखने स्टेशन रोड,राजेन्द्र पार्क चौक के अलावा मालवीय नगर पर निकले।निरीक्षण के दौरान खालसा पब्लिक स्कूल के पास स्थित होटल संचालक को सड़क के किनारे कचरा डालना महंगा पड़ गया।निगम आयुक्त लोकेश चन्द्राकर ने गुरुवार को निरीक्षण के दौरान मालवीय नगर खालसा पब्लिक स्कूल के पास उस होटल संचालक को बुलाकर उससे कचरा उठवाया। चेतावनी देते हुए बोले-दोबारा सड़क पर मत फेंकना कचड़ा।शहर क्षेत्र में निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने पाया कि कई दुकानदारों द्वारा दुकान से निकलने वाला कचरा बाहर फेंका जाता है, जिस पर निगम आयुक्त ने अधिकारियों को नजर रखने के साथ साथ जुर्माना करने के निर्देश दिए।नगर निगम आयुक्त ने मौजूद अधिकारी को साफ-सफाई व्यवस्था को सुधारकर और बेहतर ढंग से करने के निर्देश दिए। होटल व दुकान से निकलने वाले अपशिष्ट प्रबंधन एवं गीले-सूखे कचरे को नगर निगम के वाहनों में दिया जाए। अन्यथा नगर पालिक निगम अधिनियम की 1956 की धारा 418 (1) के प्रावधानों के तहत नियमानुसार जुर्माना वसूला जाएगा। इसकी जिम्मेदारी दुकान संचालक की होगी।निरीक्षण के मौके पर उद्यान प्रभारी अनिल सिंह,पीआईयू कुणाल,परम कुमार सहित अमला मौजूद रहे। दुकान के बाहर कचरा देख आयुक्त नाराज थे। पहले तो उन्होंने दुकानदार को खूब खरी खोटी सुनाई। आयुक्त ने दुकानदार से कहा, कि आप लोग पढ़े लिखे समझदार लोग हो। उसके बाद इस तरह सड़क पर कचरा फैला रहे हो।आयुक्त के आदेश पर 500 रुपये का अर्थदंड किया गया।

उल्लास नवभारत साक्षरता रथ को कलेक्टर ने दिखायी हरी झण्डी

दुर्ग। कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी ने आज कलेक्टोरेट परिसर से उल्लास नवभारत साक्षरता रथ को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस रथ के माध्यम से जन-जन तक उल्लास नवभारत साक्षरता का यह संदेश पहुंचाया जाएगा ताकि जिले के 15 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के सभी असाक्षर लोगों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कराकर डिजिटल युग के लिए तैयार कर शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस 08 सितम्बर 2024 के उपलक्ष्य में जिले में 01 सितम्बर से 08 सितम्बर 2024 तक अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। इस दौरान उल्लास नवभारत कार्यक्रम अंतर्गत असाक्षर लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

तालाब में कुंड बनाने आयुक्त ने दिए निर्देश

- प्रतिमा विसर्जन के दौरान होगी रोशनी

रिसाली (समय दर्शन)। नगर पालिक निगम रिसाली की आयुक्त मोनिका वर्मा ने तालाबों का निरीक्षण की। उन्होंने हिंद नगर तालाब और मरोदा डेम में पूजा सामाग्री विसर्जन के लिए कुंड तैयार करने निर्देश दिए। साथ ही प्रतिमा विसर्जन तैयारी करने कहा। आयुक्त मोनिका वर्मा पहले हिंद नगर तालाब का निरीक्षण की। उन्होंने यहां पूर्व से बने कुंड की स्थिति को देख नाराजगी जाहिर की। आयुक्त ने निर्देश दिए कि पूर्व से बने कुंड की सफाई कर उसे व्यवस्थित करे। जिससे पूजन सामाग्री विसर्जन करने तालाब पहुंचे नागरिकों को असुविधा न हो। आयुक्त ने निगम क्षेत्र की अन्य तालाब की स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने निर्देश दिए कि कर्मचारी तालाब में बने घाटों की सफाई सप्ताह में एक बार अवश्य करे। निरीक्षण के दौरान अभियंता अखिलेश गुप्ता, नितिश अमन साहू, गोपाल सिन्हा समेत जन स्वास्थ्य विभाग के सुपरवाइजर विरेन्द्र देशमुख, सतीश देवांगन आदि उपस्थित थे।

नागरिकों को समझाईश- निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने स्थानीय नागरिकों से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि वर्तमान में निगम ने अभियान चलाकर तालाबों की सफाई की है। इसके बाद भी आमजन स्वच्छता पर ध्यान नहीं दे रहे है। गणेश और दुर्गा पूजा सामाग्री के लिए हिंद नगर तालाब में कुंड तैयार किया है। सम्यक प्रयास करे कि लोग कुंड में ही विसर्जन सामाग्री को विसर्जित करे।

निर्धारित स्थान में प्रतिमा विसर्जन- निगम ने रिसाली और आस पास के क्षेत्र के प्रतिमा विसर्जन के लिए दो स्थान चिन्हित किया है। हिन्द नगर तालाब और नेवई डेम में विसर्जन के दिन पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था की जाएगी। नेवई डेम में चिन्हित स्थान पर बेरिकेटिंग भी किया जाएगा। निगम प्रशासन ने निर्धारित स्थान में ही प्रतिमा विसर्जन करने कहा है।

नीता तिवारी बनी तीज क्वीन, सरयूपारीय महिला ब्राम्हण समाज के उत्सव में जुटी महिलाएं

दुर्ग (समय दर्शन)। सरयूपारीय महिला ब्राम्हण समाज ने पद्मनाभपुर स्थित विवेकानंद भवन में उत्साह के साथ तीज मिलन मनाया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं की धूम रही। जिसमें महिलाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा साबित की। तीज क्वीन प्रतियोगिता विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। जिसमें नीता तिवारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि मोनिका मिश्रा द्वितीय और प्रभा शर्मा तृतीय स्थान पर रही। लक्की क्वीन श्वेता तिवारी बनी। टाईम हॉउजी में प्रथम सीमा तिवारी,द्वितीय सरिता मिश्रा व तृतीय स्थान अपर्णा तिवारी ने प्राप्त किया। शिव तांडव और सत्यभामा रुखमणी नृत्य नाटिका में महिलाओं की प्रस्तुति ने सबका दिल जीत लिया। एकल नृत्य, समूह नृत्य व गायन की प्रस्तुतियों ने जमकर तालियां बटोरी। तीज मिलन कार्यक्रम में पूर्व विधायक अरुण वोरा की पत्नि मंजू वोरा व महापौर धीरज बाकलीवाल की पत्नि श्वेता बाकलीवाल विशिष्ट अतिथि के तौर पर शामिल हुई।

उन्होने सरयूपारीय महिला ब्राम्हण समाज की सदस्यों को तीज उत्सव की बधाई दी और आयोजन की सराहना की। कार्यक्रम में मंच संचालन अपर्णा तिवारी और आभार प्रदर्शन सह सचिव रानी उपाध्याय ने किया। तीज मिलन उत्सव के आयोजन में सरयूपारीय महिला ब्राम्हण समाज की अध्यक्ष संगीता शर्मा, संरक्षक भारती दुबे, अनीता पांडेय, सचिव किरण मिश्रा, उपाध्यक्ष सरिता मिश्रा,अपर्णा तिवारी, कोषाध्यक्ष तनु मिश्रा, सहसचिव रानी उपाध्याय,सह कोषाध्यक्ष ममता तिवारी, विशेष सलाहकार शकुंतला चौबे,शीला चौबे का विशेष योगदान रहा। आयोजन में रायपुर से कुसुम शर्मा, विभा तिवारी, प्रीति शुक्ला और भिलाई से आरती दीवान,अर्चना चौबे क अलावा संगठन के पदाधिकारी विशेष रुप से मौजूद रहे। सरयूपारीय महिला ब्राम्हण समाज की संगठन सचिव विजय लक्ष्मी दूबे, मंजूलता मिश्रा, दुलारी,अनिता दीवान, ममता पांडेय, मीडिया प्रभारी मिली शर्मा, सपना शर्मा, सांस्कृतिक सचिव सुषमा तिवारी, राजेश्वरी मिश्रा,संगीता मिश्रा, रंजना शर्मा,प्रशीला शर्मा, श्वेता शुक्ला, धार्मिक कार्यक्रम प्रभारी आशा चौबे, भारती दीवान, प्रभा शर्मा के अलावा अन्य सदस्य कार्यक्रम में उत्साह के साथ शामिल हुए।

सरस्वती शिशु मंदिर बसना मे विभागीय विज्ञान, गणित मेला का आयोजन

बसना(समय दर्शन)। सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बसना में दिनांक 31 अगस्त 2024 से 02 सितम्बर 2024 तक तीन दिवसीय विभागीय विज्ञान, गणित मेला का आयोजन किया गया । जिसमें मुख्य अतिथि रुपकुमारी चौधरी महासमुन्द लोकसभा सांसद उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में राजिम विभाग के 15 विद्यालय के 385 भैया बहनों ने भाग लिया । संरक्षक आचार्य 11 व 16 दीदी और 8 निर्णायक , विभाग समन्वयक एवं पर्यवेक्षक के संरक्षण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

विज्ञान गणित प्रश्न मंच प्रतियोगिता में भैया बहनों ने अपनी प्रतिभा दिखाई जो बहुत ही सराहनीय था । विभाग समन्वयक मानिक लाल साहू पर्यवेक्षक वीरेंद्र कुमार साहू कसेकेरा प्राचार्य, विज्ञान प्रभारी धनुर्जय साहू बसना प्राचार्य, आस कुमार साहू फिंगेश्वर, शशि सिन्हा नगरी, मीना लाल चक्रधारी कसेकेरा, गणित प्रमुख हेमलाल पटेल मैनपुर, शिवकुमार कन्नौजे महासमुंद, तेजेंद्र यादव कुरूद उपस्थित रहे । उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि तरुण दास व्याख्याता अध्यक्ष सतीश चंद्र बेहेरा व्याख्याता, विशिष्ट अतिथि सुशील कुमार कानूनगो पूर्व प्राचार्य बागबाहरा, रमेश कुमार कर पूर्व प्राचार्य बसना, रामचंद्र अग्रवाल बसना विद्यालय समिति अध्यक्ष, जितेंद्र अग्रवाल कोषाध्यक्ष, धनेश्वर साहू पूर्व अध्यक्ष, पुष्पलता साव, ललिता रात्रे , सुभाष शर्मा उपस्थित रहे। प्रांतीय स्तर पर गणित मेला के लिए 48 और विज्ञान के लिए 78 भैया बहनों का चयन हुआ है । प्राचार्य धनुर्जय साहू, अध्यक्ष रामचन्द्र अग्रवाल एवं विभाग समन्वयक मानिक लाल साहू ने भैया बहनों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की ।

मनरेगा लाभार्थी पशु शेड बनने से अतिरिक्त आमदनी का ले रहे हैं लाभ

दुर्ग (समय दर्शन)। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना अब पंजीकृत श्रमिकों को केवल रोजगार उपलब्ध कराने तक ही सीमित नही है, अपितु यह पंजीकृत श्रमिक परिवारों को अब कुशल रोजगार के साथ बेहतर आजीविका की ओर ले जाने का कार्य भी कर रही है। मनरेगा के लाभार्थी श्रीमती कुमारी बाई/प्रेमलाल साहू, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत पक्का पशु शेड बन जाने पर अतिरिक्त आमदनी का लाभ ले रहे हैं। पशु शेड बन जाने से पशुओं को रखने में बहुत सहुलियत मिल रही है।

ऐसे ही एक श्रमिक परिवार ग्राम पंचायत रसमड़ा की रहने वाली श्रीमति कुमारी बाई/प्रेमलाल साहू के परिवार की कहानी है। यह परिवार अब कुशल श्रम से स्वरोजगार की दिशा में कदम आगे बढ़ा चुके हैं और इस कार्य में मनरेगा के तहत बनने वाले पक्के पशु शेड ने उनकी काफी मदद की। वह खुद कहते है कि अब रोजगार की चिंता खत्म हो गई है। ज्यादा बड़ा मकान ना होने के कारण वह अच्छी तरह से पशुओं का देखभाल करने में असमर्थ थे। उनके परिवार ने अपने भूमि पर पक्का पशु शेड बनाने का आवेदन ग्राम पंचायत में दिया, जिसे ग्राम सभा के प्रस्ताव के आधार पर स्वीकृत कर ग्राम पंचायत को एजेंसी बनाया गया। ग्राम पंचायत के माध्यम से राशि 93 हजार रूपए खर्च कर गत वर्ष शेड निर्माण का कार्य पूर्ण किया गया।

उन्होंने बताया कि शेड में रखे पशुओं से हर महीने आठ से दस हजार रूपए की आमदनी दूध बेचकर हो जाती है, इससे उनके परिवार के लिए एक नियमित आय का साधन बन गया है। पहले अकुशल रोजगार पर आश्रित रहने वाले श्रीमती कुमारी बाई/प्रेमलाल साहू के परिवार के लिए महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत बना पशु शेड रोजगार का एक अच्छा साधन साबित हो रहा है। इस निर्माण में श्रमिक के रूप कार्य करके श्रीमति कुमारी बाई/प्रेमलाल साहू को चार हजार रूपए का मनरेगा पारिश्रमिक भी प्राप्त हुआ। आज इनके पास दो दुघारू गाय है। इनसे प्रतिदिन सात लीटर से अधिक दुग्ध का उत्पादन हो रहा है। इनसे श्रीमती कुमारी बाई/प्रेमलाल साहू के परिवार को लगभग आठ से दस हजार रूपए प्रतिमाह की अतिरिक्त आमदनी का स्त्रोत बन गया है। मनरेगा के हितग्राही श्रीमती कुमारी बाई/प्रेमलाल साहू और उनका परिवार अब बेहतर जीवन यापन की दिशा में आगे बढ़ रहे है।

पिथौरा के थानेश्वर मंदिर में श्री गणेश जी की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का किया शुभारंभ

बसना(समय दर्शन)। पिथौरा नगर में स्थित थानेश्वर मंदिर में श्री गणेश जी की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का विशाल शोभा यात्रा महिलाओं के द्वारा कलश लेकर निकली गई ।

जिसमें काफी संख्या में भक्तगण शामिल हुए। आपको बता दे कि,भगवान श्री गणेश सिद्धि विनायक जी का प्राण प्रतिष्ठा समारोह विद्वान पुरोहित आचार्यगणो के द्वारा पांच दिवस पूजा अर्चना मंत्र उच्चारण के साथ संपन्न होगा। जिसका आयोजन 3 सितम्बर से 7 सितम्बर तक आयोजित है। कार्यक्रम के अंतिम दिवस सहस्त्रधारा स्नान महा आरती के साथ गणेश चतुर्थी के पर्व पर मंदिर परिसर में भगवान श्री गणेश जी की मूर्ति स्थापना की जाएगी।

इस आयोजन में प्रतिदिन भजन संध्या एवं रामचरितमानस का आयोजन भी किया जाएगा। उक्त आयोजन को सफल बनाने के लिए थानेश्वर मंदिर समिति आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की आम जनों को अपील की है।

शासकीय हाई स्कूल बाराडोली की 14 छात्राएं सरस्वती सायकल योजना से लाभान्वित

सरायपाली(समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ सरकार में छात्राओं के लिए चल रही नि:शुल्क सरस्वती साइकिल योजना से शासकीय हाई स्कूल बाराडोली की 14 छात्राएं लाभान्वित हुई।सरस्वती साईकिल वितरण कार्यक्रम में जनपद पंचायत सरायपाली अध्यक्ष श्रीमती कुमारी धनेश्वर भास्कर के मुख्य अतिथि,अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य गोपाल प्रसाद बरिहा और विशिष्ट अतिथि शाला विकास समिति अध्यक्ष दंडधर साव,सरपंच ग्राम पंचायत बाराडोली लक्ष्मीशंकर दीवान,भोजराज साहू एसएमसी अध्यक्ष मिडिल विभाग,शिक्षाविद् नारायण प्रसाद मांझी,शिक्षाविद् सौमित्री रथ,पंच त्रिलोचन साहू,पंच परमेश्वर साहू,पंच मेघनाथ साव,अलेख साहू,सरस्वती चौहान की उपस्थित में 14 छात्राओं को साईकिल वितरण किया।मुख्य अतिथि भास्कर मेम ने कहा कि छत्तीसगढ़ में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य शासन छात्राओं के लिए सरस्वती साइकिल योजना चला रही है,जिससे बच्चियां बेरोकटोक स्कूल आ जा सकें,इस योजना से छात्राओं के नामांकन और उपस्थिति में बढ़ोत्तरी हुई है।2018 से संचालित स्कूल के लिए अभी तक नहीं बन पाए स्कूल भवन के लिए हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया गया।प्रभारी प्राचार्य बरिहा सर ने स्वागत भाषण देते हुए अपने स्कूल की उपलब्धियों से अतिथियों को अवगत कराते हुए कहा कि सरस्वती साइकिल योजना के तहत 9 वीं कक्षा में अध्ययनरत अनुसूचित जाति,अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग और अन्य वर्ग के बीपीएल परिवार की बालिकाओं को साइकिल दी जाती है। यह एक ऐसी महत्वाकांक्षी योजना है जो न सिर्फ बेटियों को स्कूल आने जाने में मदद करती है बल्कि बेटियों की शिक्षा की राह आसान हो जाती है।इस कार्यक्रम में ग्रामीणों के साथ ही साथ व्याख्याता तेजकुमारी भोई,दीपक पटेल,लंबोदर नायक,रामनाथ पहाड़िया,डिग्रीलाल पटेल और गोविंद दास उपस्थित रहे।कार्यक्रम का संचालन तेजकुमारी भोई और सुंदर लाल डडसेना मधुर ने किया।

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.), पिन-491111 से मुद्रित कर 65/1920, परशुराम नगर प्रोफेसर कालोनी, रायपुर (छ.ग.) पिन- 492001 से प्रकाशित। संपादक :- दामोदर राव, फोन नं.-0771-4218364, मो. 9303404360, ईमेल- samaydarshanraipur@gmail.com, RNI: CHHHIN/2018/76878, डाक पंजीयन /रायपुर संभाग/63/2022-24